ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म्

स्वाध्याय विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 27 श्रावण-भाद्रपद वि०स० 2072 अगस्त 2015 अंक : 08

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाषः 0135-2787001

शरदुत्सव (अथर्ववेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
आश्विन कृष्ण पक्ष दशमी से आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी विक्रमी सम्वत् 2072 तक
तदनुसार बुधवार 7 अक्टूबर से रविवार 11 अक्टूबर 2015 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग साधना निदेशक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता आगरा
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ के संयोजक	:	श्री उत्तम मुनिः जी।
भजनोपदेशक	:	पण्डित रूवेल सिंह आर्यवीर
भजन एवं प्रवचन कार्यक्रम के संचालक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा

बुधवार 7 अक्टूबर से रविवार 11 अक्टूबर 2015 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रातः 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 8.00 बजे से 10.00 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 7 अक्टूबर 2015 को प्रातः 9:00 बजे।
गायत्री यज्ञ	- बुधवार 7 अक्टूबर 2015 को प्रातः 10 से 12 बजे तक
तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव	- गुरूवार 8 अक्टूबर 2015 को प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- डॉ. वीरपाल विद्यालंकार जी, आचार्य डॉ. धनन्जय जी एवं आचार्य उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 9 अक्टूबर 2015 को प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, डॉ. मंजु नारंग, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 10 अक्टूबर 2015 को प्रातः 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 10 अक्टूबर 2015 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशिका	- श्रीमती मिथिलेश आर्य एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
पूर्णाहुति एवं ऋषिलंगर	- रविवार 11 अक्टूबर 2015 को यज्ञ की पूर्णाहुति, भजन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर

नोट : यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।

बस सेवाः रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, सन्तोष रहेजा, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, गोपाल कृष्ण हांडा, विजय कुमार, रामभज मदान

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

ओ३म्

पवमान

वर्ष–27 अंक–8

श्रावण–भाद्रपद 2072 विक्रमी अगस्त 2015

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,115 दयानन्दाब्द : 190

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान....	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष का आधार...	मनमोहन कुमार आर्य	7
सुख–शान्ति....का आधार– स्वाध्याय	रामनिवास गुणग्राहक	11
योगेश्वर कृष्ण का चरित्र	डॉ० भवानीलाल भारतीय	16
सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा	डॉ० अजीत मेहता	20
नकली से असली	दृष्टांत समुच्चय से साभार	22
'योगेश्वर श्री कृष्ण, गीता एवं वेद'	मनमोहन कुमार आर्य	23
ईश्वर एक है, अनेक नहीं	आर्य मान्यताएँ से साभार	26
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर.....		27
दानदाताओं की सूची		28
पवमान पत्रिका......... अवशेष शुल्क		29

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

स्वाध्याय की महिमा

स्वाध्याय शब्द का अर्थ है– उत्तम रीति से आद्योपांत और अधिकृत रूप से सब ओर पहुंच अर्थात् व्यक्ति द्वारा उत्तमता से ग्रन्थ के आरम्भ से अन्त तक अधिकारपूर्वक सर्वतः प्रवेश स्वाध्याय है। किसी भी प्रकार के ग्रन्थ को पढ़ लेना स्वाध्याय नहीं है। अध्याय शब्द वेदवाचक है, अतः वह अध्ययन ही स्वाध्याय कहलायेगा जिसमें वेदों का अध्ययन सम्मिलित हो। हम स्वाध्याय शब्द का विग्रह स्वस्य अध्याय करें तो इसका अर्थ होगा, अपना अध्ययन, आत्म निरीक्षण और आत्मचिन्तन। तैत्तिरीय उपनिषद् के अनुसार आचार्य दीक्षान्त भाषण में शिष्यों को उपदेश देते हैं कि स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद मत करना। स्वाध्याय को मात्र श्रम ही नहीं परमश्रम माना गया है। परमतप माना गया है। पतंजलि ने स्वाध्याय को परम योग कहा है। शतपथ कार याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहा है। स्वाध्याय से मनुष्य में अन्तर्मुख होने की प्रवृत्ति जागृत होती है, जिससे उसमें आत्मबोध उत्पन्न होता है और अपनी सीमाओं से विमुक्त होकर वह लोकोपकार की ओर अग्रसर होता है। स्वाध्याय से व्यक्ति शतपथकार के अनुसार 'युक्तमना भवति' अर्थात् समहित मन वाला या स्थिर चित्त होता जाता है। स्वाध्यायी व्यक्ति पराधीन नहीं रहता। स्वाध्यायशील व्यक्ति में महात्मा विदुर के अनुसार उन्निद्र रोग का प्रक्षालन हो जाने से वह वास्तविक सुख की नींद सोता है। याज्ञवल्क्य के अनुसार स्वाध्यायशील व्यक्ति 'आत्मनः परमचिकित्सकः भवति' अर्थात् वह अपनी चिकित्सा करना जान जाता है। स्वाध्याय से व्यक्ति मेधावी बनता है और उसकी इन्द्रियां विषयाभिमुख हो जाती हैं, जिससे वह इन्द्रियों को वश में कर लेता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति को ऐसा आराम प्राप्त होता है जो अद्वितीय हो, जिसकी उपमा न हो। स्वाध्याय–श्रम से प्रज्ञा–वृद्धि हो जाने से सभी सिद्धियां आ विराजती हैं। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। आर्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे पंचमहायज्ञों को अपनी दिनचर्या में सदैव सम्मिलित रखेंगे। ब्रह्मयज्ञ में स्वाध्याय और सन्ध्योपासना करना अत्यन्त आवश्यक है। श्रावणी पर्व निकट आ रहा है। सनातन काल से ही वर्षा ऋतु के चार माहों में वर्षा के कारण मार्ग अवरुद्ध हो जाते थे और साधु, संन्यासी और वानप्रस्थ ग्रामों के निकट आकर वेदोपदेश और प्रवचनों के द्वारा धर्मप्रेमी गृहस्थों को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करते थे। हिन्दू सम्प्रदाय में यह प्रथा लगभग समाप्त हो चुकी है परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनुकम्पा से आर्यसमाज ने इसे पुनर्स्थापित किया है और देश के अधिकांश आर्यसमाजों में श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद कथाओं की धूम रहती है। कुछ वर्षों से यह देखा जा रहा है कि यह परिपाटी एक खाना पूर्ति जैसी बन गई है और पर्व के समाप्त होते ही आर्यजन पुनः प्रमाद में आकर अपने वेद स्वाध्याय के व्रत को भूल जाते हैं। स्वाध्याय का उपक्रम श्रावणी पूर्णिमा अथवा श्रावण मास की पंचमी से होता है। सभी सुधि पाठकों से निवेदन कि वे इस पावन पर्व पर दैनिक वेद स्वाध्याय का व्रत लेकर आजीवन उसका पालन करते रहेंगे। यह अंक आपकी सेवा में स्वाध्याय विशेषांक के रूप में प्रस्तुत है। सितम्बर के प्रथम सप्ताह में कृष्ण जन्माष्टमी है। आप सबको, इस अवसर पर शुभ कामनाएं।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

ईश्वर प्राप्ति के विघ्न

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।।

(ऋ0 10। 82। ; यजु 17।31)

शब्दार्थ– हे मनुष्यो! (न, तम्, विदाथ) तुम उसे नहीं जानते (यः, इमा, जजान) जिसने इन लोकों को उत्पन्न किया है (युष्माकम्, अन्यत्) वह तुमसे भिन्न है परन्तु (अन्तरम् बभूव) वह तुम्हारे अन्दर, तुम्हारी आत्मा में विद्यमान है। तुम उसे नहीं जानते क्योंकि (नीहा–रेण प्रावृताः) तुम अज्ञान एवं अन्धकार के कुहरे से ढके हुए हो (जल्प्याः)जल्पी हो, व्यर्थ की बातें करते रहते हो (च) और (असुतृपः) केवल प्राण–पोषण में लगे रहते हो (उक्थशासः) वेद–मंत्रों का उच्चारण– मात्र करनेवाले, आचरणहीन होकर (चरन्ति) विचरते हो।

भावार्थ– ईश्वर इस सृष्टि का स्रष्टा है। इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु अपने स्रष्टा का पता दे रही है। इस सृष्टि का रचयिता तुमसे भिन्न है और तुम्हारे अन्दर, तुम्हारी आत्मा में ही बैठा है फिर भी तुम उसे नहीं जानते। तुम उसे इसलिए नहीं जानते क्योंकि

1. तुम अविद्या और अज्ञान में फँसे हुए हो। ईश्वर तुमसे दूर नहीं है परन्तु अपने अज्ञान के कारण तुम उसे जान नहीं पाते।
2. तुम जल्पी हो। व्यर्थ की गपशप में, व्यर्थ की बकवास में अपना समय नष्ट करते हो।
3. तुम प्राणों के पोषण में लगे रहते हो। खाना–पीना और मौज उड़ाना तुमने अपने जीवन का लक्ष्य बना रक्खा है।
4. तुम स्तुति–प्रार्थना– उपासना भी करते हो तो हृदय से नहीं, दम्भ से करते हो। इन चार बाधाओं को हटा दो। आपको ईश्वर के दर्शन होंगे।

मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान है स्वाध्याय

–कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

सु+आङ् अधिपूर्वक इङ्–अध्ययने धातु से स्वाध्याय शब्द बनता है। स्वाध्याय शब्द में सु, आ और अधि तीन उपसर्ग हैं। 'सु' का अर्थ है उत्तम रीति से, 'आ' का अर्थ है आद्योपान्त और 'अधि' का अर्थ है अधिकृत रूप से। किसी ग्रन्थ का आरम्भ से अन्त तक अधिकारपूर्वक सर्वतः प्रवेश स्वाध्याय कहलाता है। आचार्य यास्क द्वारा लौकिक भाषा के लिए भाषा शब्द और वेद के लिए अध्याय शब्द का प्रयोग किया गया है। इस अर्थ पर विचार करने के उपरान्त हम देखते हैं कि वह अध्ययन ही स्वाध्याय कहा जा सकता है, जिसमें वेद का अध्ययन सम्मिलित हो। इसके अतिरिक्त **स्वाध्याय** का अर्थ है– **'स्वस्य अध्यायः'** अर्थात् अपनी सत्ता का अध्ययन, आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना और परब्रह्म का स्वरूप जानने के लिए अध्ययन करना स्वाध्याय है। महर्षि पतंजलि द्वारा योगदर्शन के साधनापाद के प्रथम सूत्र में कहा गया है– **''तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानिक्रियायोगः''** अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान यह योग की क्रिया हैं। स्वाध्याय सूक्ष्म शरीर का विषय है। इससे अहंकार, मन और बुद्धि शुद्ध होती है। स्वाध्याय शब्द तप और ईश्वर प्रणिधान दोनों के मध्य में है। इस शब्द से तप और ईश्वर प्रणिधान दोनों की पुष्टि होती है। स्वाध्याय न करने वाला व्यक्ति तपस्वी नहीं बन सकता है और न ही उसका ईश्वर पर विश्वास दृढ़ हो सकता है।

स्वाध्याय के लाभ– शतपथकार ने स्वाध्याय के लाभों का वर्णन करते हुए एक मंत्र (11.5.7.1) में कहा है कि इससे व्यक्ति **''युक्तमना भवति''** अर्थात् समाहित मन वाला या स्थिरचित्त हो जाता है। स्वाध्याय का दूसरा लाभ है कि वह, **''अपराधीनो भवति''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति किसी की पराधीनता स्वीकार नहीं करता है। वह इन्द्रियों के रूप, रस, गन्ध आदि विषयों के वश में नहीं रहता है। तीसरा लाभ है–**''अहरहरर्थान् साधयते''** अर्थात् वह दिनों–दिन अर्थों की सिद्धि करता है। यहां शतपथकार का अर्थ से आशय शब्द के पीछे जो गहन अर्थ है, उसकी सिद्धि कर लेना है। चौथा लाभ है–**''सुखं स्वपिति''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति चैन की नींद सोता है। पांचवां लाभ है– **''परम चिकित्सक आत्मनो भवति''** अर्थात् वह अपनी आत्मा का चिकित्सक हो जाता है, वह अपने मानसिक रोगादि विकारों की स्वयं चिकित्सा कर सकता है। छठा लाभ है– **''इन्द्रियसंयमः भवति''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति इन्द्रिय संयमी हो जाता है। सातवां लाभ है– **''एकरामता भवति''** अर्थात् वह केवल एक तत्त्व परमात्मा से खेलता है। सांसारिक सभी खेलों से विमुख होकर केवल परमात्मा में ही आनन्द लेता है। आठवां लाभ है– **''प्रज्ञावृद्धिर्भवति''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पण्डित बन जाता है। नवां लाभ है– **''ब्राह्मण्यम्''** अर्थात् उसमें ब्रह्ममण्यता आ जाती है। ब्रह्ममण्यता के आने से उसमें सभी प्राणियों के हित की कामना, सर्वदुःखानुभूति, संवेदनशीलता, परोपकारिता, स्वार्थत्याग, परमतपस्विता आदि गुण स्वतः आ विराजते हैं। दसवां लाभ है– **''प्रतिरूपचर्याम्''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति वह दर्पण है जिसमें हर सद्गुण की प्रतिकृति या छाया देख सकते हैं। ग्यारहवां लाभ है– **''यशः''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति को यश की प्राप्ति होती है। बारहवां लाभ है– **''लोकपक्ति''** अर्थात् उसका लोक–परिपाक हो जाता है या उसे लोक सिद्धि प्राप्त हो जाती है। तेरहवां लाभ है– **''अर्चा–बुद्धि''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति की अर्चना होती है। उसके प्रभाव से जनगण में विनय, श्रद्धा, नम्रता आदि

गुण आ जाते हैं और सभी श्रद्धापूर्वक उसका आदर करते हैं। चौदहवां लाभ है– **''दानशीलता''** अर्थात् उसे दान और दक्षिणा की प्राप्ति होती है। पन्द्रहवां लाभ है– **''अज्येयतया''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति अज्येय हो जाता है। सोलहवां लाभ है– **''अवध्यता''** अर्थात् वह सभी के लिए अवध्य हो जाता है। स्वाध्याय के विषय में शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–

''यावन्तं ह वा इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददँल्लोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति।(11.5.6.3)**''**

अर्थात् धन से परिपूर्ण पृथिवी का दान देने पर जितने लोक जीते जा सकते हैं, स्वाध्यायशील व्यक्ति ठीक उससे तिगुने लोकों को जीत लेता है। यदि सामान्य यज्ञ करने वाला भूलोक को जीतता है, तो स्वाध्याय–यज्ञ करने वाला भूर्, भुवर् और स्वर् तीनों लोकों को जीत लेता है। यदि सामान्य यज्ञ करने वाला मनुष्यलोक को जीत लेता है, तो स्वाध्यायशील व्यक्ति ठीक उससे तिगुने लोकों, मनुष्यलोक, पितृलोक और देवलोक को जीत लेता है। इसी मंत्र में याज्ञवल्क्य आगे कहते हैं– **''भूयांसं चाक्ष्यं (लोकं जयति) य एवं विद्वान् अहरहः स्वाध्यायमधीते''** अर्थात् जो विद्वान् इस प्रकार दिन–प्रतिदिन स्वाध्याय करता है, वह उससे भी बढ़ कर अक्षयलोक को जीतता है। अक्षयलोक का अर्थ है– न क्षीण होने वाला ब्रह्मलोक।

स्वाध्याय से पुनर्मृत्यु से मुक्ति– शतपथ ब्राह्मण में (11.5.6.9) में कहा गया है– **''अति ह वै पुनर्मृत्युं मुच्यते। गच्छति ब्रह्मणः सात्मताम्।''** अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पुनर्मृत्यु से मुक्त हो जाता है। वह परमेश्वर के समान परान्तकाल तक जन्म–मृत्यु बन्धन से छूट जाता है। इस प्रकार एक बार के प्रयत्न से यदि उसे ब्रह्मणत्व प्राप्त हो गया तो उसका ब्रह्मणत्व मरता नहीं है और पुनर्जन्म प्राप्त करने पर वह, वहीं से कार्य आरम्भ कर देता है क्योंकि वह स्वाध्याय से ब्रह्म की सात्मता को प्राप्त कर लेता है अर्थात् वेद को आत्मसात कर लेता है, ब्रह्म (आनन्द) को आत्मसात कर लेता है।

वेद में वर्णित स्वाध्याय के लाभ– वेद में अनेक स्थानों पर स्वाध्याय के लाभ बताए गए हैं। ऋग्वेद के एक प्रसिद्ध मंत्र में कहा गया है–

पावमानीर्यो अध्येत्यृशिभिः संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।।

ऋग्वेद 9.67.32।।

अर्थात् जो व्यक्ति अग्नि, वायु आदि ऋषियों द्वारा सम्यक् भरण की गई रसीली पवित्र ऋचाओं का, वेदज्ञान का अधिकृत रूप से परायण करता है और समय आने पर उनका प्रवचन भी करता है, उस स्वाध्यायशील और प्रवचनकर्ता के लिए वेदरस से युक्त वाणी क्षरणशील दुग्ध, घृत और शहद आदि हर प्रकार के उत्तम पेयों को देकर परिपूर्ण कर देती है।

परमेश्वर ने आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान देते हुए अथर्ववेद (19.71.1) के एक मंत्र से जीवों के कल्याण के लिए अनेक लाभों का वर्णन किया है–

''**स्तुता मया वरदा वेदमाता। प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्''**

परमेश्वर कहते हैं कि मैंने ही जिसका स्तवन अथवा प्रस्ताव किया है और जो वेद–माता समस्त ज्ञान की निर्मात्री, समस्त लाभों की निर्मात्री है और जिसकी कुक्षि में रहकर व्यक्ति द्वितीय जन्म धारण करता है, अतः द्विजनिर्मात्री भी है। यह न केवल द्विजनिर्मात्री है अपितु द्विजों को पवित्र करने वाली है। यह वेदमाता वरों को देने वाली है, परन्तु उस माता का एक आदेश है कि इसे सर्वत्र प्रेरित करो, प्रचारित करो। इससे तुम्हें दीर्घ जीवन, उसका आधार प्राणशक्ति, प्रजनन शक्ति, सन्तान, पशुधन, यश, धन ओर

ब्रह्मतेज, ये सात वर मिलेंगे जिनमें सभी लौकिक मंगलों का समावेश हो गया है। इसके अतिरिक्ति एक अन्य पारलौकिक मंगल है, वह भी तुम्हारे लिए है, परन्तु उसके लिए शर्त यह है कि पहले इन सातों लौकिक मंगलों को मुझे दे दो। इन्हें मुझे देकर मोक्षधाम को चले जाओ।

महर्षि पतंजलि ने कहा है– **''स्वाध्यादिष्टदेवतासम्प्रयोगः''** अर्थात् वेदादि मोक्षशास्त्रों के पठन–पाठन, प्रणवादि मंत्रों के जाप के अनुष्ठान से परमात्मा के साथ सम्प्रयोग = सम्बन्ध स्थापित होकर, उसका साक्षात्कार हो जाता है। महर्षि मनु ने वेद के स्वाध्याय करने का फल बताया है–

वेदाभ्यासोऽन्वहं भाक्त्या महायज्ञक्रिया क्षमा।
नाशयन्त्याशु पापानि महापातकजान्यपि।।

यथैधस्तैजसां वह्निः प्राप्तं निर्दहति क्षणात्।
तथा ज्ञानाग्निना पापं सर्वं दहति वेदविद्।।

मनु० 11.245–246।।

प्रतिदिन वेद का यथासम्भव अध्ययन–मनन, पंचयज्ञों का अनुष्ठान, तप–सहिष्णुता, बड़े पापों से उत्पन्न पाप–भावनाओं और दुःसंस्कारों का भी नष्ट कर देती है। जैसे अग्नि अपने तेज से समीप आए हुए काष्ठ आदि इन्धन को जला देती है, वैसे ही वेद का ज्ञाता, वेद रूपी अग्नि आने वाली पाप–भावनाओं को जला देता है। जब साधक वेद के स्वाध्याय से अपनी सभी पाप–भावनाओं और पाप–संस्कारों को नष्ट कर देता है, तो ऐसा साधक धर्मनिष्ठ बन कर परमात्मा के ज्ञान द्वारा परमात्मा के सानिध्य को अनुभव करता है। इस प्रकार का ज्ञान होना ही परमात्मा की प्राप्ति है। परमात्मा ही जीवात्मा का इष्टदेव है और परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान से ही परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम होता है।

महर्षि व्यास ने 1.28 के भाष्य में कहा है–

''स्वाध्याययोगसंपत्त्या परमात्मा प्रकाशते''

अर्थात् स्वाध्याय और योग की सम्पत्ति से परमात्मा का ज्ञान हो जाता है।

महर्षि व्यास ने 2.32 के भाष्य में कहा है–

''स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा''

अर्थात् मोक्ष का उपदेश करने वाले वेदादि सत्यशास्त्रों का अध्ययन = पठन–पाठन करना और प्रणव = ओंकार का जप करना स्वाध्याय है।

ब्रह्मविद्या का जानकार वही होता है जो ईश्वर के लिए समर्पित हो। ईश्वर की अनुभूति करने के लिए अनेक लोग प्रयास करते रहते हैं, किन्तु बिरले ही यथार्थ रूप में ईश्वर के निकट पहुंच पाते हैं या उसकी अनुभूति कर पाते हैं। इसका कारण साधकों में पात्रता का अभाव होना है। संसार में दिखाई दे रही भौतिक वस्तुओं से मिलने वाले सुखों से अपने मन को हटाकर सर्वव्यापक परमात्मा में लगाना पड़ता है। ईश्वर अनुभूति के लिए परोपकारिता, दयालुता आदि गुणों को धारण करते हुए जीवमात्र में ईश्वर की छवि देखने की दृष्टि पैदा करनी होती है। प्रत्येक साधक चाहता है कि उसे सुख की प्राप्ति हो। ऐसा सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं है। यह तो ईश्वर की वास्तविक अनुभूति होने पर ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है, जिसके लिए यम, नियम आदि योग के आठों अंगों की साधना करते हुए समाधि लगानी पड़ती है। ज्ञान, भक्ति और कर्म ऐसे उपाय हैं, जिनसे पात्रता में वृद्धि की जा सकती है। जिस साधक को उसकी पात्रता को देखते हुए परमेश्वर चयनित कर लेता है, उसे ही वह प्राप्त हो पाता है। ज्ञानमार्ग का पथिक स्वाध्याय के द्वारा ही इस ओर आगे बढ़ सकता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि स्वाध्याय मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान है।

'धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का आधार सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय'

–मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य एक विचारशील व बुद्धिमान प्राणि है। मनुष्य का बुद्धि तत्त्व अन्य सभी प्राणियों से विशिष्ट होने के कारण मनुष्य की स्थिति सभी प्राणियों से श्रेष्ठ व उत्तम है। अन्य प्राणियों की तरह से मनुष्य भी अन्न, फल व दुग्धादि पदार्थों का भोजन करता है परन्तु अन्य प्राणियों में मनुष्य के समान बुद्धि की श्रेष्ठता व क्षमता न होने के कारण वह प्राकृतिक व स्वाभाविक ज्ञान के अनुसार ही जीवनयापन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। धर्म–कर्म, अच्छाई व बुराई तथा सेवा–सत्कार आदि का उनके लिये कोई महत्त्व नहीं होता। उनके कर्म ईश्वर की ओर से प्रायः प्रेरित व निश्चित हैं। उन्हीं का पालन करते हुए उनका जीवन समाप्त हो जाता है। मनुष्य के पास मननशील बुद्धि होने से यह विचार व मनन करता है एवं इससे इसे अपने भले व बुरे का ज्ञान होता है। कई बार यह सही मार्ग चुनता है और कई बार गलत मार्ग भी चुन लेता है जिससे इसे भारी क्लेश होता है। इसका कारण मनुष्य की बुद्धि व इसके द्वारा किये गये निर्णय होते हैं। **अतः बुद्धि को ऐसा बनाना कि यह अपने सभी निर्णय ठीक व सही ले सके जिससे कि इसे कभी क्लेश न हो, यही लक्ष्य स्वाध्याय से प्राप्त किया जाता है। स्वाध्याय करना जीवन में विवेक एवं बहुमूल्य मोतियों को पाना और जीवन को सुखी व श्रेयस्कर बनाना है और स्वाध्याय न करना ऐसा है कि बहुमूल्य पदार्थों व सुखों से वंचित रहना है। स्वाध्याय के इसी महत्व के कारण स्वाध्याय को नित्य कर्मों में स्थान दिया गया है। इसके महत्व के कारण आर्यों के चार प्रमुख पर्वों में से 'श्रावणी पर्व' स्वाध्याय व श्रवण का पोषक बनाया गया है। आईये स्वाध्याय पर और विचार करते हैं।**

मनुष्य शरीर में मुख्यतः पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि व जीवात्मा हैं। इन 10 इन्द्रियों को स्वस्थ रखने के लिए शौच, अच्छे शाकाहारी मिताहार व व्यायाम आदि की आवश्यकता है। मन सत्य से शुद्ध, पवित्र व अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होता है, बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है व स्वयं को सफल बनाती है। इसी प्रकार से जीवात्मा विद्या व तप से लक्ष्य 'मुक्ति' को प्राप्त कर सफल होता है। बुद्धि की उपेक्षा करके जीवन को सफल नहीं बनाया जा सकता। **जीवन को सफल बनाने के लिये इस बुद्धि को ज्ञान से सम्पन्न करने की आवश्यकता है।** बच्चे के जन्म से ही उसका ज्ञानार्जन का कार्य आरम्भ हो जाता है। माता–पिता व आस पास के अन्य बन्धु जो बोलते व क्रियायें करते हैं, उनका संस्कार बच्चे की आत्मा, मन व बुद्धि पर पड़ता है। उसका परिवेश अच्छा हो और वह अच्छी–अच्छी बातें सुने तो वह बच्चा जीवन में योग्य मनुष्य बनेगा, यह निश्चय से कहा जा सकता है। यदि उसका परिवेश व उसका श्रवण वा सुनना–सुनाना अच्छा नहीं होगा तो वह जीवन में उनसे प्रभावित होकर समुचित शारीरिक एवं बौद्धिक उन्नति नहीं कर सकेगा। अतः जीवन के विकास हेतु अच्छे परिवेश, श्रवण व सत्य ज्ञान की आवश्यकता निर्विवाद है। सन्तान के प्रथम गुरू उसके माता व पिता होते हैं। उनके शब्द सुन–सुन कर वह बालक न केवल बोलना सीखता है अपितु उन बोले गये शब्दों व वाक्यों से संस्कार भी ग्रहण करता है अर्थात् उसका सुना हुआ उसके मन व

आत्मा पर अंकित होता रहता है। वैदिक धर्म में विधान है कि जब बालक बोलना आरम्भ करता है तो माता को चाहिये कि उसे **''ओ३म्''** शब्द का उच्चारण करना सिखाये। इसके साथ ही शिशु सभी वर्णों का शुद्ध उच्चारण करे, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये जिससे वह जीवन भर सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण ही करे। जब बोलना आरम्भ करे तो माता अपने शिशु को गायत्री मन्त्र कण्ठ करा दे और ओ३म् व गायत्री मन्त्र के अर्थ भी सीखा दे। शनैः शनैः उसकी अवस्थानुसार उसे सत्य ज्ञान से परिचित कराया जाता रहे जिससे उसमें बुरे संस्कार उत्पन्न न होने पायें।

बालक–बालिका की अवस्था पांच वर्ष व इससे अधिक होने पर उसे पाठशाला, गुरूकुल या विद्यालय में भेजना होता है। वहां उसे अच्छी शिक्षा मिले जिनमें अन्यान्य विषयों के ज्ञान के साथ वैदिक, धार्मिक व नैतिक शिक्षा का यथावश्यक ज्ञान भी कराया जाना चाहिए। आर्यसमाज के गुरूकुलों में बच्चों को वेदानुसार वैदिक संन्ध्या व अग्निहोत्र नित्य प्रति कराया जाता है जिससे उसे अच्छे संस्कार मिलते हैं। निजी, सरकारी व अन्य शिक्षण संस्थाओं के बालक व विद्यार्थी इससे वंचित रहते हैं। अतः बच्चों की शिक्षा पर उनके अभिभावकों को विशेष ध्यान देना चाहिये। यदि विद्यार्थी जीवन में ही अन्य–अन्य उपयोगी विषयों के ज्ञानार्थ उनसे सम्बन्धित पुस्तकों के स्वाध्याय के अभ्यास की आदत बनती है तो यह भावी जीवन में उनके लिए बहुत उपयोगी होती है। जिनको स्वाध्याय की आदत नहीं है उनको स्वाध्याय की आदत डालनी चाहिये। **स्वाध्याय एक प्रकार से बुद्धि का व्यायाम व योग है।** इससे बुद्धि की क्षमता का उपयोग होता है और वह ज्ञान सम्पन्न होती रहती है। निरन्तर स्वाध्याय से पढ़े गये विषयों का ज्ञान हो जाता है जिससे मनुष्य के निजी व्यक्तित्व व जीवन को तो लाभ होता ही है साथ ही इसके परिवेश के लोगों को भी लाभ होता है। **स्वाध्याय से अपने जीवन का सही मार्ग चुनने में सहायता मिलती है।** बुद्धि की विचार व चिन्तन–मनन की क्षमता में वृद्धि उत्पन्न होती है। सत्य व असत्य का विवेक करने में सहायता मिलने से वह अपने जीवन के लक्ष्य सहित उसके साधनों को भी जान सकता है।

अपने अनुभव से हम यह भी कहना चाहते हैं कि स्वाध्याय का सर्वोत्तम ग्रन्थ महर्षि दयानन्द लिखित ''सत्यार्थ प्रकाश'' है। इस एक पुस्तक को पढ़ लेने पर प्रायः अधिकांश विषयों का ज्ञान हो जाता है। इसके बाद बहुत अधिक पुस्तकों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती। यह ग्रन्थ जहां अनेकानेक विषयों का सत्य–सत्य ज्ञान करता है, वहीं यह यथार्थ मानव धर्म का भी धर्मग्रन्थ है। मनुष्य इस ग्रन्थ के स्वाध्याय को जितना अधिक अपने जीवन में स्थान देंगे और इसकी शिक्षाओं का जितना अधिक अपने आचरण में उपयोग करेंगे, इससे उतना ही अधिक लाभ होगा। इसका कारण यह है कि इसमें सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर अभी तक लगभग 1.96 अरब वर्षों का सभी ऋषि–मुनियों–ज्ञानियों–पूर्वजों का ज्ञान व अनुभव भरा हुआ है।

इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसमें कोई भी बात पक्षपात से नहीं लिखी गई है अपितु संसार के सभी मनुष्य अधिक से अधिक सुखी व अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हों, यही इस पुस्तक का उद्देश्य है। जब आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो इसके साथ ही आप को इससे जुड़े हुए अन्य ग्रन्थों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा स्वतः मिलेगी। इससे ऐसा स्वभाव विकसित होगा कि आप सारा जीवन अन्य–अन्य उपयोगी पुस्तकों को पढ़ते रहेंगे जिससे नित्य प्रति आपका ज्ञान वृद्धि को प्राप्त होगा और आप अधिक से अधिक ज्ञान से सम्पन्न हो सकते हैं। **सत्य शास्त्र ''वेद'' एवं वैदिक साहित्य में ईश्वर को सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय कहा**

गया है। यह भी कहा गया है कि संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ नहीं है। यह ज्ञान की सम्पत्ति भौतिक सम्पत्ति से कहीं अधिक उपयोगी व सुखप्रद है। ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना के सफल होने पर समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। यही जीवन का लक्ष्य है और यही सुखों व आनन्द की पराकाष्ठा की स्थिति है। इसी प्रकार से संस्कृत व शास्त्रों के ज्ञान से भी मनुष्य सुखों की पराकाष्ठा के निकट पहुंच जाता है। यह स्थिति स्वाध्याय व उसके अनुरूप आचरण से प्राप्त होती है। ऐसा करते हुए मनुष्य जीवन के लक्ष्य मोक्ष को भी पा जाता है जिससे बढ़कर किसी जीवात्मा व मनुष्य के लिये अन्य कुछ प्राप्तव्य है ही नहीं।

हम निष्पक्ष रूप से अपने अध्ययन व विवेक के आधार पर यह कहना चाहते हैं कि विगत पांच हजार वर्षों में संसार के इतिहास में महर्षि दयानन्द के समान विद्वान्, योगी व पुरुषार्थी मनुष्य उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने समाज, देश व विश्व का जितना उपकार किया है, वह अन्य किसी महापुरूष ने नहीं किया। यह विस्तृत विश्लेषण का विषय है जिसे अनेक पुस्तकों का अध्ययन कर जाना जा सकता है। **यदि हम महर्षि दयानन्द के जीवन को देखते हैं तो यह उनके स्वाध्याय व जिज्ञासु प्रवृत्ति से सम्भव हुआ प्रतीत होता है।** स्वगृह त्याग कर वह योगियों व ज्ञानियों का सम्पर्क करते रहे और उनसे जो भी ज्ञान, अनुभव व योग की क्रियायें जान व सीख सकते थे, उन्हें प्राप्त किया। जहां कहीं कोई पुस्तक मिला, उसका आद्योपान्त अध्ययन ही नहीं किया अपितु उसे स्मरण करने का प्रयास किया। ऐसा करते करते सन् 1860 आ गया। तब उन्हें **आर्ष प्रज्ञा के धनी प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरू विरजानन्द सरस्वती** मिले जिनसे ढ़ाई वर्षों में आर्ष विद्या का अध्ययन कर वह कृत–कृत कार्य हो गये। गुरू की आज्ञा व स्वात्मप्रेरणा से उन्होंने जनकल्याण व देशोपकार का कार्य किया और अन्धकार में डूबे संसार को अपने प्रवचनों व ग्रन्थों से झकझोरा। संसार में फैले अज्ञानता व स्वार्थ के विष का पान कर उन्होंने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के माध्यम से सबको ज्ञान का अमृत परोसा। अज्ञानी जनता ने अपनी अज्ञानता व अपने पथप्रदर्शकों के स्वार्थवश उस अमृत को स्वीकार न कर विषयुक्त पदार्थों को अपना आध्यात्मिक भोजन बनाया हुआ है। यदि हम महर्षि दयानन्द जी के जीवन से शिक्षा लेना चाहें तो हमे निरन्तर अध्ययन व सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय की ही शिक्षा व प्रेरणा मिलती है। इसके साथ ही स्वाध्याय के लिए सर्वोत्तम ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' है। सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका महर्षि दयानन्द सरस्वती की एक ऐसी कालजयी रचनाएं हैं जो हमें जीवन का वास्तविक मार्ग बताते हुए स्वाध्याय की ओर प्रेरित करती हैं। इसलिए वेद के स्वाध्याय मार्ग पर चलने वालों के लिए महर्षि के इन ग्रन्थों का अध्ययन करना और उनकी शिक्षाओं को आचरण में लाना भी अत्यन्त आवश्यक है। आईये, वेदों की शिक्षा **''स्वाध्यायान्मा प्रमदः।''** और **''सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिशि''** को जीवन का आदर्श बनाकर हम कभी वेदों के स्वाध्याय में प्रमाद न करें तथा वेदों के अध्ययन व श्रवण से जुड़े रहें, इससे पृथक कभी न हों। योगदर्शन 1/28 सूत्र के व्यास भाश्य में कहा गया है कि **'स्वाध्याययोगसंप्तया परमात्मा प्रकाशिते'** अर्थात् स्वाध्याय और योग की सम्पत्ति से परमात्मा हृदय में प्रकाशित होता है। स्वाध्याय व योग को जीवन का आदर्श बनाकर जीवन के उद्देश्य **''धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष''** को प्राप्त कर जन्म–मरण के चक्र से होने वाले दुःख से मुक्ति को प्राप्त करें। इसके लिए वेद और वैदिक ग्रन्थों और सत्यार्थ प्रकाश का नित्य प्रति स्वाध्याय करते हुए जीवन को सफल बनायें।

श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला **'श्रावणी पर्व' 'स्वाध्याय'** से जुड़ा हुआ है।

यह मूलतः ऋषि–मुनि–विद्वानों की संगति कर उनसे उपदेश ग्रहण करने, शंका समाधान करने व जीवन को श्रेय मार्ग पर अग्रसर करने में उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने का पर्व है। श्रवण व स्वाध्याय एक दूसरे के पूरक हैं। केवल श्रवण से जीवन में काम नहीं चल सकता। **स्वाध्याय काफी सीमा तक ऋषि–मुनियों का श्रवण ही है।** जब हम **'सत्यार्थप्रकाश'** व **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** आदि ऋषि ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हैं तो यह एक प्रकार से उनके उपदेशों व प्रवचनों का श्रवण ही है। श्रवण करने में कुछ बातें विस्मृत हो जाती हैं परन्तु ऋषियों के ग्रन्थों को पढ़ने से उनके एक–एक विचार व उपदेश को कई–कई बार पढ़कर उसे हृदयंगम कर स्वयं, परिवार व इष्ट–मित्रों को लाभान्वित किया जा सकता है। ऋषियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय से देश, समाज व सारी वसुन्धरा लाभान्वित होती है। अतीत में सत्यार्थ प्रकाश से देश व विश्व के लोग लाभान्वित हुए हैं और आज भी हो रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का पाठन करके, हम आज भी एक सीमा तक महर्षि दयानन्द जी की उपस्थिति व संगति का अनुभव करते हैं। अतः श्रावणी पर्व पर इन विचारों को हृदयंगम कर जीवन में इनका अनुसरण व आचरण करना चाहिये। श्रावणी पर्व रक्षा बन्धन नाम से भी मनाया जाता है। इस पर्व में भी उत्तम भावनाओं व विचारों का समन्वय है। परिवारों में इस दिन वृहत यज्ञ कर इन दोनों पर्वों को सोत्साह मनाना चाहिये। ओ३म् शम्।

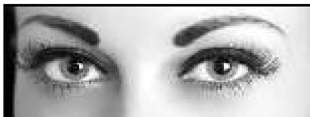

"नेत्रदान महादान"

ऋषि राम कुमार
म.नं.–112, सैक्टर–5, पार्ट–3
गुड़गांव हरियाणा 122002
दूरभाष–9968460312

जिन्दगी का हर लम्हा कर रहा कर लो कुछ कल्याण,
बन जाओगे तुम इस युग के महामानव महान,
जीते जी खून की बूंदे, और मरने पर नेत्रदान,
फरिश्ते भी नमन करेगें तुझको कह रहा समस्त जहान।

वक्त की मांग कह रही अपने जीवन को अब मोड़ो,
नये युग की शुरूआत करो, पुरानी रूढ़िवादिता छोड़ो,
हम सबको मिल करके एक दीपक नया जलाना है,
नेत्रदान है महादान घर–घर संदेश पहुँचाना है।

मरने पर नेत्र जल जाते हैं, हम सब जानते हैं,
मरने के बाद राख बन जाते हैं हम सब जानते हैं,
वही नेत्र मरने के बाद अगर दान में दे दें हम,
मरने पर भी नेत्र तुम्हारे जिन्दा रहेंगे जन्म–जन्म।

नेत्र जिसको मिलते हैं वो पूरा जन्म दुआ देता है,
नेत्र दान करने वाले को पूरा जीवन याद रखता है,
मरने के बाद भी देखता है, नेत्रदान करने वाला
ये करिश्मा है जो खुदा ने इन्सान का दे डाला।

नेत्रदान का पुण्य करने वाले को खुदा देता है,
जो मदद करता है उसका भी भला होता है,
जो भी नेत्रदान करके जाता है इस जहान से
फूलों की वर्षा करते हैं देवता आसमान से।

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

सुख-शान्ति, साधना, साक्षात्कार का आधार- स्वाध्याय

रामनिवास गुणग्राहक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की महनीय मान्यता है– मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। यहाँ बड़ा सीधा सा सन्देश है कि सब मनुष्य व्यवहार से सम्बन्धित सच झूठ को जानते हैं। महर्षि के इस कथन से इन्कार करना सरल नहीं। सच और झूठ का सामान्य ज्ञान रखने वाला मनुष्य भी अपने किसी स्वार्थ के लिये, हठ और दुराग्रह के वशीभूत होकर अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुक जाता है। प्रत्येक मनुष्य की यह स्वाभाविक दुर्बलता है कि वह जितने अंशों में सच को जानता और मानता है, उतने अंशों में उसे अपने व्यवहार में नहीं उतार पाता। अगर आने जाने और माने हुए को हम व्यवहार के धरातल पर साकार कर सकें, तो महर्षि याज्ञवल्क्य हमें बड़ा उत्साहवर्धक आश्वासन देते हैं। महर्षि शतपथ ब्राह्मण में लिखते हैं– 'यः सत्यं वदति, यथाग्निं समिद्धं तं घृतेन अभिषिञ्चत् एवं हैनं स उद्दीपयति। तस्य भूयोभूयः तेजोभवति, श्वःश्वचः श्रेयान् भवति। अर्थात् जो सत्य बोलता है, तो जैसे प्रदीप अग्नि पर घी छिड़कने से अग्नि उद्दीप्त हो उठता है, वैसे ही सत्य वक्ता का तेज उद्दीप्त होता है। प्रतिदिन उसका कल्याण ही होता है।

मानव स्वभाव की समस्या यह है कि अपना कल्याण तो चाहते हैं, लेकिन अपनी शर्तो पर। सुख, शान्ति, समृद्धि और कल्याण के लिए सच्चा विधि–विधान क्या है, यह जानने और उस पर निष्ठा पूर्वक व्यवहार करने वाले कितने भाग्यशाली होंगे? मनमाने ढंग से सुख–शांति पाने के लिए जीवन लगा देने वालों की असफलता और परमात्मा की वेदवाणी–वर्णित सुख शांति के विधि–विधान के अनुसार चलकर कुछ पा लेने वालो की उपलब्धियों को देखकर भी किसी के अन्तर्हृदय में सत्य पथ पर चलने की ललक न जगे, तो उसकी बौद्धिक क्षमता का मोल दो कौड़ी का भी क्या कर होगा? वेद की बड़ी स्पष्ट मान्यता है कि परमात्मा ने हमारे हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा स्वाभाविक रूप से दे रखी है। "अश्रद्धां अनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापति"। ईश्वर की इतनी महान कृपा को पाकर भी हम सत्य का सम्मान न करें, सत्य को जीवन में धारण न कर सकें, तो हमारा मानव होना उपनिषद् के ऋषियों की दृष्टि में 'महती विनष्टि' अर्थात् महाविनाश का कारण है। आत्मकल्याण के लिए प्राप्त यह नर तन ही जब अभिशाप बन जाए, आग बुझाने वाला शीतल जल ही जब जलन पैदा करने लगे तो ऐसी भाग्यहीनता का उपाय कोई कहाँ से लाये?

इस समस्या के आन्तरिक पक्ष पर एक दृष्टि डालकर देखें तो पता चलता है कि हमारे हृदय में सत्य और असत्य का संघर्ष निरन्तर चलता रहता है। सत्य और असत्य दोनों एक दूसरे को दबाकर स्वयं आगे आना चाहते हैं। उनके इस द्वन्द युद्ध में मनुष्य जिसके पक्ष का समर्थन कर देता है

वह जीत जाता है। हमारे अन्दर होने वाले सम्य–असत्य के संघर्ष और हमारे समर्थन पर वेद बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश डालता है। मंत्र इस प्रकार है–

"सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चा सच्चा वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यंयतरदृजीयस्तदित्सोमो अवति हन्त्यासत।।

अर्थात् उत्तम ज्ञान के अभिलाषी जन के सामने सत्य और असत्य दोनों वचन परस्पर प्रतिस्पर्धा करते हुए आते हैं। उनमें जो सत्य है, जो सरल है, उसे ही शान्ति का अभलाषी जन अपना लेता है और असत्य को त्याग देता है। मंत्र स्पष्ट कहता है कि सोम अर्थात् शान्ति चाहने वाला सत्य को स्वीकार लेता है और असत्य को त्याग देता है। यहाँ सत्य की एक पहचान बनाई है कि सत्य सरल होता है, कुटिल नहीं होता। समस्या क्या है कि हम शान्ति तो चाहते हैं, लेकिन वेद की बात न मानकर। वेद कहता है कि शान्ति चाहते हो तो सत्य की रक्षा करो, सत्य को स्वीकार करो। आज का मानव कहता है प्रभो! मै शान्ति तो चाहता हूँ लेकिन सत्य को स्वीकार करना मुझे सरल नहीं लग रहा। क्या असत्य के कन्धों पर सवार होकर मैं शान्ति नहीं पा सकता? जिस दिन, जिस पल मनुष्य सत्य को स्वीकार करने का संकल्प लेकर असत्य को ठुकराने का साहस पा लेगा, वह दिन और वह पल उसके जीवन में संसार की समस्त सुख शान्ति और समृद्धि के द्वार खोल देगा। जब तक वह ऐसा नहीं करेगा, तब तक सुखद और शान्तिप्रद दिखने वाली जिस वस्तु पर हाथ रखेगा, वह वस्तु उसके लिए दुख, दुविधा और दुर्गति का पिटारा ही खोलगी।

सत्य–असत्य की इस संघर्ष पूर्ण खींचतान और उसमें मानव की निर्णायक भूमिका को जानने के बाद, स्वाध्याय का महत्व भली–भाँति हमारी समझ में आ सकता है। इस विवेचना को समझने के बाद विवेकशील मानव के लिए यह स्वीकार कर लेना कोई कठिन न होगा कि निरन्तर सत्य का समर्थन करते रहने वाले धीर वीर पुरुष के सामने कालान्तर में असत्य प्रबलता से सिर उठाने के योग्य नहीं रहता। यही स्थिति असत्य के पक्ष पोषण करने वाले की होती है। हठ, दुराग्रह और अविद्या आदि के प्रभाव में आकर मनुष्य जब सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुकने का स्वभाव ही बना लेता है तो निरन्तर तिरस्कार और उपेक्षा का शिकार होकर सत्य दुर्बल हो जाता है और दूसरी ओर पुरुष के समर्थन से पोषण पाकर असत्य अपने प्रभाव को बढ़ा लेता है। यहाँ पुरुष अर्थात् हमारी भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण होती है। एक बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि यदि हम स्वयं को सत्य का समर्थन करने के योग्य बना लें तो हम अवनति (पतन) को रोक कर उन्नति (उत्थान) की दिशा में बढ़ सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण एवं व्यवहार के धरातल पर सत्य प्रमाणित हो चुका तथ्य यह है कि सत्य का समर्थन करके सत्य के सहारे सुख शान्ति, साधना व साक्षात्कार के पथ पर बढ़ना जितना कठिन और दुर्गम लगता है, आगे चलकर वह हमारे स्वभाव का अंग बनकर अत्यन्त सरल और सुगम होता चला जाता है। जो चार कदम इस सत्य पथ पर चल चुकें हैं, उनके हृदय में अठखेलियाँ कर रहे उत्साह, साहस, आनन्द और अटल विश्वास की झलक देखकर कोई भी अपना भय दूर कर सकता है।

स्वाध्याय का हमारा जीवन में सबसे अमूल्य लाभ यही है कि निरन्तर सद्ग्रन्थों, वेद शास्त्रों उपनिषद और दर्शनों का स्वाध्याय करते रहने से हमारे अन्दर सत्य को स्वीकारने और असत्य को लताड़ने की शक्ति पैदा हो जाती है। स्वाध्याय क्या है? सामान्य जन की भी समझ में सरलता से आ सके, ऐसी परिभाषा स्वाध्याय की करने चलें तो स्वाध्याय आत्मा का स्थूल भोजन है, जिसे वह बुद्धि रूपी मुख से प्राप्त करता है। शरीर का भोजन जैसे विभिन्न ग्रन्थियों से प्राप्त विभिन्न रसों के साथ मिलकर आंतों में पचाया जाता है, तो उसमें रस, रक्त और मांस मज्जा आदि अवस्थाओं से निकलकर वह अग्नि धातु वीर्य बनकर पौरुष, पराक्रम के

रूप में प्रकट होता है। ठीक उसी प्रकार स्वाध्याय से प्राप्त ज्ञान, (विद्या) चिन्तन, मनन, निदिध्यासन आदि अवस्थाओं से परिपुष्ट होकर साक्षात्कार की अवस्था में पहुँचता है। तो वह हमारे आत्मबल में अपूर्व वृद्धि का कारण बनता है। शारीरिक बल की अपेक्षा आत्मबल मानव के कल्याण में कितना अधिक सहायक होता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। शरीर –बल जैसे शरीर यात्रा में सहायक होता है, ठीक वैसे ही आत्मबल आत्मोन्नति में सहायक है। शारीरिक बल शरीर के साथ ही बनता बिगड़ता है, जबकि आत्मबल देह–देहान्तरों तक चलने वाले आत्म कल्याण अभियान में काम आता रहता है।

स्वाध्याय के महत्व पर शास्त्रीय रीति से चिन्तन करने पर स्वाध्याय की महिमा हमारे हृदय में घर कर जाती है। वैदिक काल में शिक्षापूर्ण होने पर दीक्षान्त समारोह के समय आचार्यगण गृहस्थ में पर्दापण करने वाले स्नातकों को जो महत्वपूर्ण शिक्षाएँ जीवन भर पालने के लिए देते थे, उनमें 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः और 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्' का विशेष स्थान होता था। स्वाध्याय के माध्यम से ही हम आत्म कल्याण के पथ से मोक्ष के लक्ष्य से जुड़े रह सकते हैं। स्वाध्याय ही एक मात्र ऐसा अनुष्ठान है जो चारों आश्रमों में समान रूप से करणीय कर्त्तव्य माना है। ब्रह्माचर्य आश्रम में निरन्तर स्वाध्याय करते रहने वाला बटुक जब गृहस्थ के महनीय उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने हेतु जाता है तो उसे आदेश मिलता है कि परिवार के भरण पोषण में स्वाध्याय को मत भूल जाना। वानप्रस्थ के लिए तो स्वाध्याय और साधना दो ही कर्म मुख्य हैं। सन्यास के समय कहा जाता है– "संन्यसेत सर्वकर्माणि वेंदमेंक न संन्यसेत्– अर्थात् चाहे सारे कर्म छोड़ देना लेकिन वेद का स्वाध्याय मत छोड़ना। शतपथ में लिखा है– ये ह वै के च श्रमाः इमे द्यावा पृथिवी अन्तरेण स्वाध्यायो है व तेषां परमता काष्ठा। (11,5,7,2)"

इस द्युलोक और पृथिवी लोक के बीच में जो भी कोई श्रम हैं, स्वाध्याय उन सबकी पराकाष्ठा है। महर्षि दयानन्द स्वाध्याय (वेद पढ़ना, पढ़ाना) परमधर्म मानते हैं तो महर्षि याज्ञवल्क्य और मनु स्वाध्याय को परम् तप मानते हैं। 'यदि ह वा अपयभ्यक्तः। अलंकृतः सुहितः सुखेशयने शयानः स्वाध्यायमधीत आहैव स नखाग्रेभ्यः तप्यते।" (11,3,7,4) कोई व्यक्ति सुगन्धित तेल लगाकर, श्रृंगार किये हुए, अच्छी प्रकार से सुखदायक बिछौने पर लेटा हुआ भी स्वाध्याय करता है, तो समझना चाहिए कि वह नख से शिख पर्यन्त तप कर रहा है। महर्षि मनु का कथन हैं–

आहैव स नाखग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् (2.167)

जो द्विज सुगन्धित माला धारण किये हुए भी यथा सामर्थ्य प्रतिदिन स्वाध्याय करता है, निश्चय जानो कि वह नखाग्र पर्यन्त परमतप कर रहा है। हमारे यज्ञ और योग जैसे आत्म –कल्याण करने वाले अनुष्ठान स्वाध्याय के बिना सम्पन्न नहीं होते। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में महर्षि दयानन्द ब्रह्मायज्ञ के सम्बन्ध में लिखते है– ब्रह्म यज्ञस्य अयं प्रकारः साडगानां वेदादि शास्त्राणां सम्यगध्ययनमध्यापनं संध्योपासनं च सर्वै कर्त्तव्यम्।" अर्थात् ब्रह्मयज्ञ का प्रकार यह है कि वेदादि शास्त्रों का सांगोपांग अध्ययन– अध्यापन और संध्या नित्य करना सबका कर्त्तव्य है। महर्षि याज्ञवल्क्य की घोषणा 'स्वाध्यायो वै ब्रह्मयज्ञ' भी दयानन्द के कथन का समर्थन कर

रही है। अष्टांग योग की बात करें तो शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान मिलकर नियम की पूर्णता होती है। 'स्वाध्याय' और इष्ट देवता 'सम्प्रयोगः– की महत्ता को कोई स्वाध्यायशील ही बता सकता है। महर्षि व्यास तो अपने भाष्य में यहाँ तक लिखते हैं कि

स्वाध्यायात् योगमासीत् योगात् स्वाध्याय मामनेत् स्वाध्याययोगसम्पत्यां, परमात्मा प्रकाशते।।

योग और स्वाध्याय दोनों के सम्यक् अनुष्ठान से ही परमात्मा प्रकाशित होता है।

स्वाध्याय करने से मिलने वाले लाभ और न करने से होने वाली हानि प्रकट करके ही लेखपूर्ण करेंगे। सर्वप्रथम वेद से ही प्रारंभ करें तो "स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम्.... प्रसिद्ध मंत्र में वर्णित आयु प्रजा, पशु, यश, धन और ब्रह्म तेज जैसी दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति स्पष्ट वर्णित है। ऋग्वेद का बड़ा प्रसिद्ध मंत्र है।

पावमानीर्यो अध्यतिऋषिभिः सम्भृतं रसम्। तस्मैं सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम।।

जो वेद की पावन ऋचाओं का अध्ययन करता है, उस अध्येता (पढ़ने वाले) के लिए यह सरस्वती वेदवाणी दूध, धृत, मधु और उत्तम प्रकार के रसों को देती है। इसी प्रकार महर्षि मनु की साक्षी है।

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः। तस्यनित्यं क्षरत्येष पयोदधि घृतं मधु।।

जो व्यक्ति नित्य प्रति शुद्ध होकर वेदाध्ययन रूप स्वाध्याय को एक वर्ष तक करता है, उसको इससे दूध, दही, धृत और मधु की प्राप्ति होती है। तैत्तरीय आरण्यक 2.10.13 में आता है कि जो व्यक्ति स्वाध्याय रूप यज्ञ में नित्य ऋचारूप आहुतियाँ देता है तो देवता उससे प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार में जो वर देते हैं वे हैं– दीर्घायु, दीप्ति (तेज, ब्रह्मवर्चस) सम्पत्ति, यश, आध्यात्मिक उच्चता और भोजन। इस प्रकार वेद से लेकर हमारे ऋषि मुनि भी स्वाध्याय के जिन लाभों को स्वीकार करते हैं, वे मानव के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि हैं।

अब स्वाध्याय न करने वालों के लिए हानि भी बताते चलें।

"यस्तित्यात्यं सचिविदं सखायं.....नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम!।।

वेद के मंत्र में कहा है कि जो सच्चे सखा परमात्मा की वेदवाणी को त्याग देता है, नहीं पढ़ता, उसकी वेद वर्णित ज्ञान–विज्ञान में हिस्सेदारी समाप्त हो जाती है, फिर वह जो कुछ भी सुनता है, उसका अर्थ नहीं जान पाता है, इस प्रकार वह उत्तम कर्मों के मार्ग को प्राप्त नहीं होता।

महर्षि याज्ञवल्क्य स्वाध्याय न करने वाले ब्राह्मण के लिये बड़ी भयंकर चेतावनी देते हैं। शतपथ– 11.5.7.1 में – **'यन्ति वा आपः। एत्यादित्यः।**

एति चन्द्रमाः... तस्मात् स्वाध्यायो अधेतव्यः।" की घोषणा हमारे कान खोलने के लिए पर्याप्त है। भाव यह है देखो नदियाँ बह रही हैं, सूर्य गति कर रहा है, चन्द्रमा, नक्षत्र चल रहे हैं। यदि वे सभी देव गति करना छोड़कर

सौजन्य से–
KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT
DEHRADUN

रुक जाएँ तो जो स्थिति इस संसार की होगी तो वही स्थिति उस दिन उस ब्राह्मण की होगी जो जिस दिन स्वाध्याय नहीं करेगा। सृष्टि संचालन के लिए इन देवों का नियमित गति करने रुप व्रत का पालन जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक एक ब्राह्मण के लिए नित्य वेद स्वाध्याय करना है। इसलिए अन्त में स्वाध्याय करने की प्रेरणा– 'तस्मात् स्वाध्यायो अधेतव्यः' कहकर दी है। यहाँ बता देना आवश्यक है कि जो ब्राह्मण देव को छोड़कर अन्यत्र श्रम (स्वाध्याय) करता है, वह सन्तति सहित शूद्रत्त्व को प्राप्त होता है, ऐसा मनु का आदेश है। ब्राह्मण नित्य स्वाध्याय करे, वह भी वेद का। मनु महाराज स्वाध्याय में छूट देने के पक्ष में नहीं है। 'स्वाध्याये नास्ति अनध्यायो ब्रह्मासत्रं हि तत् स्मृतम्' (2.106) स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ना, क्योंकि वह ब्रह्म यज्ञ है। इतना ही नहीं इस सम्बन्ध में मनु बड़ी कठोरता से आदेश देते हैं– 'सर्वान्परित्यजेत् अर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः"। (4.17) स्वाध्याय में रूकावट डालने वाले सब अर्थों; (कामों) को त्याग देना चाहिए।

स्वाध्याय की महती महिमा और स्वाध्याय से प्राप्त अगणित लाभों को देखते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं, **'तसमाद् अपि ऋचं वा यजुर्वा सामवा गाथां वा कुंब्यां वा अभिव्यवहारेद् व्रतसय अव्यच्छेदाय"।** (शत 11.5.6.9)एक ऋचा ही सही, यजु मंत्र ही हो, साममंत्र हो अथवा एक ही गाथा ही सही–व्रत की अखण्डता के लिए इतना तो नित्य स्वाध्याय कर ही ले। आर्यों! वेद से लेकर मनु, याज्ञवल्क्य एवं अन्यायं महर्षि गण स्वाध्याय जैसी सामान्य सी लगने वाली प्रवृत्ति के सम्बन्ध कितनी महत्वपूर्ण बातें कहते हैं। हमारा विश्वास अपने ऋषि महर्षियों पर नहीं रहा। एक ओर तो यह संसार पाखण्डी लोगों के चरणों में सिर रखकर उनकी बात को वेद वाक्य मानकर स्वीकार कर लेता है, इधर हम हैं कि ऋषि परम्परा से प्राप्त और प्रमाणित स्वाध्याय जैसे आत्म कल्याणकारी कर्म को भी जीवन का अंग नहीं बना सकते। लेखक का अनुभवसिद्ध मानना है कि स्वाध्याय से अधिक सरल, सुगम और सार्थक उपाय आत्म कल्याण के क्षेत्र में अन्य कोई नहीं है। जीवन के दुरित दूर करने और भद्र प्राप्त करने की रामबाण औषधि है– 'स्वाध्याय'। आर्यो! क्या– इतना सब कुछ पढ़ –सुन या जान समझकर भी स्वाध्याय करने का दृढ़ संकल्प नहीं लोगे? लेने का मन बन रहा है तो अभी लो! अवश्य लो।

प्रेरणादायक

हर्ष का विषय है कि हमारे अनुरोध का सम्मान करते हुए श्री शिव कुमार जी डाकपत्थर, देहरादून निवासी ने गौशाला के लिए पानी की पाईप लाईन डालने के लिए 11000 रुपए का सात्विक दान दिया है तथा पं० उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता, आगरा ने तपोवन विद्या निकेतन देहरादून के मेधावी छात्रों को 500 रुपए प्रति माह छात्रवृत्ति देने का संकल्प किया है। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून सभी दानी सज्जनों का हृदय से धन्यवाद करता है।

'योगेश्वर कृष्ण का चरित्र

डॉ० भवानीलाल भारतीय

संसार मे अनेक महापुरूष हुए हैं, किन्तु शायद ही कोई ऐसा हुआ हो जो योगेश्वर मगवान् कृष्ण की तुलना में रक्खा जा सके। बचपन से लेकर जीवन के अन्त तक वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते रहे। उन्होंने धर्म, न्याय और सत्य के प्रति अपनी गहरी आस्था सदा ही प्रकट की और अन्यों को भी धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। वे धर्म पर आचरण तो करते ही थे, धर्म के सच्चे उपदेशक भी थे। उनके इसी आदर्श धर्म पालन पर मुग्ध होकर ऋषि दयानन्द ने लिखा– ''देखो! श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त कोई अधर्म का काम नही किया।'' भगवान् व्यास ने लिखा है–:

यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः।

जहाँ धर्म है वहाँ कृष्ण हैं और जहाँ कृष्ण हैं वहाँ जय तो निश्चित ही है। संजय ने गीता की समाप्ति पर इसी बात को इस प्रकार दोहराया–

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अर्थात् जहाँ योगेश्वर कृष्ण और उनके साथी गाण्डीवधारी अर्जुन हैं, वहाँ पर विजय है, वहीं पर ऐश्वर्य है और अविचल नीति भी वहीं है।

कृष्ण के बाल्यकाल पर नज़र डालें। उन्होंने ब्रह्मचर्य धारण कर अपनी शारीरिक शक्तियों का विकास किया। इसी कारण वे अनेक त्रासदायक जीव–जन्तुओं को मार सके तथा अपने लोकोपकारी कार्यों से ग्वालों

और ग्रामवासियों के प्रिय बने। समय आने पर उन्होंने आचार्य सान्दीपनि के आश्रम में रहकर विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया और युद्ध कौशल भी सीखा। वे शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत सच्चे क्षत्रिय थे। आर्ष शास्त्रों में क्षत्रिय का लक्षण बताते हुये कहा गया है कि ''सच्चा क्षत्रिय वही है जो अपनी प्रजाओं का पालन करता है।'' यद्यपि कृष्ण स्वयं कभी राजा नहीं बने, किन्तु उन्होंने जहाँ–जहाँ प्रजा को पीड़ित और दुःखी देखा, वहाँ अत्याचारों को मिटाकर सामान्यजनों को सुखी बनाने के लिए वे सदा आगे आते रहे। रण कौशल में वे अद्वितीय थे। यादव–वीर सात्यकि तथा अर्जुन ने युद्ध की विद्या उन्हीं से सीखी थी। उनके शास्त्रज्ञान का उल्लेख तो स्वयं पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर के राजसूय–यज्ञ के अवसर पर किया और उन्हें

वेद, वेदांग तथा विज्ञान का पण्डित बताया। चारों वेदों के अतिरिक्त वेद के अध्ययन में सहायक शिक्षा, व्याकरण, निरूक्त, कल्प, छन्द और ज्योतिष नामक वेद के छहों अंगो का उन्होंने विस्तृत अध्ययन किया था। इसके अतिरिक्त वे संगीत, चिकित्सा तथा अश्व–परिचर्या (घोड़ों की देखभाल) की विद्याएँ भी जानते थे।

शारीरिक और बौद्धिक विकास के साथ उनमें नैतिक बल भी अपरिमित था। वे महान् सदाचारी तथा शीलवान थे। माता–पिता की आज्ञाओं का पालन तथा अपने से बड़ों के प्रति पूज्यभाव उनके चरित्र की विशेषता थी। मद्य आदि का सेवन तथा जुए के दुर्व्यसन से वे सदा दूर रहे, जबकि उनके समकालीन क्षत्रिय राजाओं में ये दोष आ चुके थे। उन्होंने तो द्वारिका के यादवों के लिए यह आज्ञा प्रसारित कर दी थी कि यदि कोई व्यक्ति मदिरा पीता हुआ पाया गया तो उसे घोर दण्ड दिया जाएगा। ब्रह्मचर्य और इन्द्रिय–संयम की दृष्टि से उन्होंने उच्च आदर्श स्थापित किया। मात्र देवी रूक्मिणी ही उनकी पत्नी थी और एक प्रद्युम्न ही उनका पुत्र था जो रूप, गुण, शील और पराक्रम मे अपने पिता के सर्वथा अनुरूप था। यह खेद की बात है कि उनके ब्रह्मचर्य और एक पत्नीव्रत जैसे आदर्श गुणों की लोगो ने उपेक्षा तथा अनदेखी की और उन्हें कामी तथा लम्पट के रूप मे चित्रित किया।

श्रीकृष्ण आर्य–मर्यादाओं तथा आदर्श दिनचर्या का कठोरता से पालन करते थे। महाभारत में स्थान–स्थान पर उनकी इसी आदर्श दिनचर्या का उल्लेख मिलता हैं दुर्योधन से संधि करने का प्रस्ताव लेकर वे हस्तिनापुर जाते हैं तो मार्ग में, जब सवेरा हुआ तो उठकर उन्होंने संध्यादि नित्यकर्म किये तथा ब्राह्मणों से आदेश प्राप्त कर नगर में प्रवेश किया। ऐसे उल्लेखों से ज्ञात होता है कि संध्या–अग्निहोत्र आदि नित्य कर्म करने में उन्होने कभी आलस्य नही दिखलाया। यह उनका आदर्श जीवनक्रम रहा। उनकी राजनीति तथा युद्धनीति तो अदभुत ही थी। उन्होंने जो कुछ किया,, आर्यवर्त्त के समग्र हित के लिये किया। सम्पूर्ण मानवजाति की भलाई उनका अन्तिम लक्ष्य था और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही उन्होने अपने समकालीन अत्याचारी प्रजापीड़क तथा दुष्ट शासकों का दमन किया। कंस, जरासन्ध और शिशुपाल–जैसे धरती का भार बढ़ाने वाले, अनार्य कर्मों मे लगे तथा मानवजाति के शत्रु लोगों का दमन उन्होंने स्वयं किया तथा भीम आदि से करवाया। कौरवों को पराजित करने और पाण्डवों को विजय दिलाने में भी उनकी ही नीति काम करती रही। भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य और दुर्योधन–जैसे कौरव सेनापतियों का पराभव कर धर्मराज्य की स्थापना का उनका महान स्वप्न अन्ततः पूरा हुआ। उनकी नीतिमत्त, रणचातुरी, तथा व्यवहार कुशलता को ठीक प्रकार से न समझने के कारण लोग उन्हें महाभारत–युद्ध के परिणामस्वरूप हुए सर्वनाश के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। बात इससे ठीक उल्टी है। कृष्ण तो सदा यही प्रयत्न करते रहे कि महाभारत–युद्ध को किसी–न–किसी प्रकार से टाला जाऐ। वे युद्ध को समस्या के समाधान का अन्तिम साधन मानते थे, प्रथम नहीं।

यही कारण है कि जब सब लोगों ने यह जान लिया कि बिना युद्ध किये पाण्डवों को उनका अधिकार प्राप्त नहीं होगा, तब भी वे युद्ध न होने देने के लिए प्रयत्नशील रहें।

अन्तिम बार कौरवों को युद्ध से विरत रखने के लिए वे स्वयं शान्ति के दूत बनकर हस्तिनापुर गए और इसे उन्होंने व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न नही बनाया। उनके संगी–साथी पाण्डवगण तथा बहिन से भी अधिक प्रिय द्रौपदी तो यह कहकर उनके हस्तिनापुर– गमन का विरोध करती रही कि दुष्ट, अनीति में रत तथा हठी दुर्योधन कहीं उनका अपमान न कर बैठे, किन्तु व्यक्तिगत मान अपमान की परवाह किये बिना ही वे अपने मिशन को पूरा करने के लिये राजधानी हस्तिनापुर के लिए चल पड़ते हैं। उनका विश्वास था कि यदि वे अपने ध्येय में सफल होते हैं और दोनों पक्षों के बीच संधि हो जाती है, तो यह धरती और यह देश महाविनाश की विभीषिका से बच जाएँगे। यही कामना उनके जीवन का प्रमुख ध्येय थी। जब उन्होंने देखा कि युद्ध तो होगा ही तब उन्होंने स्वयं उससे सक्रियरूप से अलग रहने की घोषणा कर दी। उन्होने अर्जुन का सारथी बनना स्वीकार किया, किन्तु वास्तव में शत्रु के पराजय की सम्पूर्ण गूढ़ नीति उन्ही के द्वारा बनाई गई थी।

कृष्ण की आर्यो के वर्णाश्रम–धर्म में पूर्ण निष्ठा थी। उन्होंने स्वकथित गीता में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र के पृथक्–पृथक् कर्त्तव्यों और आचारों का विधान किया और सबको अपने–अपने धर्म के पालन में लगे रहने का उपदेश दिया। उनके लिए धर्म 'कर्त्तव्य' का ही पर्याय था। उनके युग में नारी के गौरव और सम्मान में कमी आ रही थी, किन्तु कुन्ती, गांधारी, द्रौपदी, सुभद्रा, तथा रूक्मिणी–जैसी सन्नारियों के प्रति आदर और सद्भाव का प्रदर्शन कर उन्होंने बताया कि नारी को सम्मान तथा गौरव तो मिलना ही चाहिए। वे तथाकथित निम्न–वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए भी सदा कार्यरत रहे। सामाजिक संकीर्णता, कट्टरता तथा अनुदारता का उनमें लेश भी नही था। वे न तो मिथ्या, मूढ़ तथा अंधविश्वासपूर्ण परम्पराओं को व्यर्थ ढोने के पक्षपाती थे और न शिष्ट आर्यजनोचित मर्यादाओं के अतिक्रमणक को ही सहन करते थे। सर्वत्र सन्तुलन, अनुशासन और शिष्टाचार ही उनके जीवन के लक्ष्य रहे। ऐसा था कृष्ण का अनुकरणीय आर्य–चरित्र।

वे ज्ञान और कर्म के समन्वय के इच्छुक थे। उनकी आध्यात्मिक और दार्शनिक शिक्षाओं को भगवद्गीता में देखा जा सकता है। किसी भी दृष्टि से देखें, कृष्ण आदर्श आर्य–चरित्र की साकार अभिव्यक्ति हैं। बंकिमचन्द्र चटर्जी के शब्दों मे ऐसा सर्वगुणान्वित चरित्र मानव–इतिहास में कही दिखाई नही पड़ता। ऐसे इतिहासपुरूष धरती पर सदा नही आते।

कलयुग में मानवजाति के लिए अनुकरणीय उदाहरण

चण्डीगढ़ के भाटिया परिवार के 8 सदस्यों ने अप्रैल 2013 में देहदान करके अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। हम जानते हैं कि यदि मृत्यु के बाद हमारी देह किसी के काम आ जाए तो यह महापुण्य का कार्य होगा। इसलिए आइए भाटिया परिवार के निम्न भाई–बहनों से प्रेरणा लेकर हम भी देहदान/नेत्रदान करके अपना जीवन सार्थक करें।

1. श्री कृष्ण कुमार भाटिया 2. श्री धर्मवीर भाटिया 3. श्री भीमदेव भाटिया 4. श्री सुशील कुमार भाटिया 5. श्रीमती दर्शना रानी भाटिया 6. श्रीमती वेदकुमार भाटिया 7. श्रीमती प्रेमकुमारी भाटिया 8. श्रीमती विजय रानी भाटिया।

भाटिया परिवार को पवमान के समस्त पाठकों की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए पवमान पत्रिका का माह–नवम्बर एवं दिसम्बर 2014 का अंक देखें।

स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा तपोवन आश्रम के सम्बन्ध में व्यक्त विचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
World Council of Arya Samaj

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002

पत्रांक : फा. सं. सार्व. आ. प्र. सभा/ 15/ 517 दिनांक: 2-6-2015

माननीय श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी

सादर नमस्ते !

आशा है ईश कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। आपके आमंत्रण पर दिनांक 10 मई, 2015 को वैदिक साधन आश्रम तपोवन के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में उपस्थित होने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ इसके लिए धन्यवाद। आप तथा श्री अग्निहोत्री जी की व्यवस्था में वैदिक साधन आश्रम की संचालन व्यवस्थ्ज्ञा को देखकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। वास्तव में आप महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप तपोवन आश्रम का संचालन कर रहे हैं। कार्यक्रम की सफलता के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से आप तथा आपके समस्त सहयोगी कार्यकर्ताओं को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रकट करते हुए यह आशा करता हूँ कि आप सभी लोग वैदिक आश्रम की संचालन व्यवस्था को भविष्य में इसी प्रकार से सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)

सभा प्रधान

मो: 09013783101,

सेवा में,
श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी
मंत्री, वैदिक साधन आश्रम तपोवन
देहरादून (उत्तराखण्ड)

सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा

डॉ० अजीत मेहता

आँवलें के मौसम में नित्य प्रातः व्यायाम या भ्रमण के बाद दो पके पुष्ट हरे आंवलों को चबाकर खायें और यदि इस प्रकार कच्चा आंवला न खा सकें तो उनका रस दो चम्मच मिलाकर पीयें। जब आंवलों का मौसम न रहे तब सूखे आंवलों का कूट–पीसकर कपड़े से छानकर बनाया गया आंवलों का चूर्ण तीन ग्राम (एक चम्मच की मात्र से) सोते समय रात को अन्तिम वस्तु के रूप में शहद में मिलाकर या पानी के संग लें। इस तरह तीन–चार महीनों तक प्रतिदिन आंवलों का प्रयोग करने से मनुष्य अपनी काया–पलट कर सकता है। निरन्तर प्रतिदिन सेवन करने से भूख और पाचन–शक्ति बढ़ जाती है, गहरी नींद आने लगती है, सिरदर्द दूर हो जाता है, मानसिक और मर्दाना शक्ति बढ़ती है, दाँत मजबूत हो जाते हैं, बाल काले व चमकदार हो जाते हैं, काँति, ओज और तेजस्विता की वृद्धि होती है और मनुष्य बुढ़ापे में भी जवान बना रहता है। आंवलों में रोग–निरोधक गुण होने के कारण स्वतः ही रोगों से बचाव होता है। और मनुष्य सदैव निरोग रहकर लम्बी आयु प्राप्त करता है।

विशेष– 1. आंवले के प्रयोग के साथ सात्विक भोजन करें। 2. आंवला एक उच्च कोटि का रसायन है। यह रक्त में से हानिकारक और विषैले पदार्थों को निकालने और वृद्ध मनुष्यों को पुनः जवान बनाने में सक्षम है। इसके नियमित सेवन से रक्त–वाहिनियाँ लचकीली बनी रहती हैं और उनकी दीवारों की कठोरता दूर होकर रक्त का परिभ्रमण भली–भाँति होने लग जाता है। रक्त–वाहिनियों में लचक बनी रहने के कारण मनुष्य का न तो हृदय फेल होता है, न ही उच्च रक्तचाप का रोग होता है और न ही रक्त का थक्का बन जाने से रुकावट के कारण मस्तिष्क की धमनियाँ फटने पाती हैं। 3. आंवलों के निरन्तर सेवन से रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र इन सब धातुओं से मलिन या मृत परमाणु देह के बाहर निकल जाते हैं और उनके स्थान पर नूतन और सबल परमाणुओं का प्रवेश हो जाता है। रक्त वाहिनियाँ बुढ़ापे में भी लचकीली बनी रहती हैं, चेहरे की झुर्रियाँ दूर हो जाती हैं और मनुष्य वृद्धावस्था में भी नवयुवकों की भाँति चुस्त और ताकतवर बना रहता है।

सहायक उपचार–

1. आरोग्यता, लम्बे समय तक यौवन बनाये रखने के लिए– दिन में बांयी और रात्रि में दायीं नासिका से श्वास लेने की आदत डालने पर मनुष्य चिरकाल तक युवा बना रह सकता है। इसके लिए रात्रि को बायीं करवट सोना चाहिए ताकि दायें नथुने से श्वास लिया जा सके और दिन में आराम और विश्राम करते समय दाहिने करवट सोयें ताकि बायें नथुने से सांस ली जा सके।

2. बुढ़ापे पर विजय प्राप्त कर योवन को स्थायी बनाने के लिये डाल के पके पपीते का नियमित सेवन करना चाहिए। पपीता यौवन का टॉनिक है। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए इसे खाली पेट नाश्ते के रूप में उपयोग करना चाहिये। पपीते का फल खाते रहने वाले व्यक्ति को तपेदिक, दमा, आँखों के रोग, अपच, रक्तहीनता आदि रोग नहीं होते। यह आंतों की सफाई करने में बेजोड़ और पाचन संस्थान के रोगों को दूर करने वाला उत्तम फल है।

समस्त बीमारियों से बचाव–

रात को सोते समय दो काली हरड़ के चूर्ण की फंकी लेकर गुनगुना पानी पीते रहने पर

कोई बीमारी नहीं होती। कम से कम सप्ताह में एक बार अवश्य लें।

विशेष – 1. काली हरड़ हानि रहित हल्का विरेचक है। यह वात पित्त कफ़ से उत्पन्न दोषों को और बलगम को पाखाना द्वारा निकाल देती है। यह न केवल दस्तों द्वारा आंतों में संचित दूषित मल को बाहर निकालती है बल्कि रोग से मुकाबला करने की शक्ति भी देती है। हरड़ 'सारक' और 'रसायन' एक साथ दोनों गुणों से युक्त है। सारे शरीर में स्थित दूषित पदार्थ को आन्त्र में खींचकर लाकर मल द्वारा बाहर निकाल देती है। शरीर के विभिन्न भागों में दूषित दोष, धातु और मल से मार्ग–अवरोध होता है, जिसके कारण विभिन्न प्रकार के रोगों के होने की संभावना होती है, हरड़ 'स्त्रोतोविबन्धहर' होने के कारण मार्ग–अवरोध दूर कर स्त्रोतों और शरीर की शुद्धि करती है और प्रत्येक अंग तथा हृदय, मस्तिष्क, पेट रक्त आदि को प्राकृतिक दशा में नियमित करती है। इसी कारण हरड़ का सेवन करने वाला बीमारियों से बचा रहता है। हरड़ का सेवन करने वाला बीमारियों से बचा रहता है। हरड़ में 'रसायन' गुण होने के कारण यह शरीर के सप्त धातुओं को शुद्ध और पुष्ट करती है तथा शरीर में शक्ति, स्फूर्ति और ताज़गी प्रदान करती है। शरीर की समस्त क्रियाओं को सुधारती एवं स्वाभाविक बनाती है। शरीर के सूक्ष्म कोषों को स्वस्थ दशा में बनाये रखती है और असमय वृद्धावस्था से दूर रखती है। 2. रोजाना रात को कुछ दिन सेवन करने से फुन्सियाँ, दाने और मुँहासे आदि नहीं निकलते। फुन्सियों पर हरड़ पीसकर लेप करले से वे ठीक हो जाती हैं। मुँहासे आदि नहीं निकलते। फुन्सियों पर हरड़ पीसकर लेप करले से वे ठीक हो जाती हैं।

3. बल–बुद्धि बढ़ाने अथवा मल–मूत्र साफ लाने के लिए जुकाम, फ्लू, वात एवं कफ विकार में भोजन के बाद खाएं।

4. हरड़ चबाकर खाने से भूख बढ़ती है। पीसकर चूर्ण खाने से पेट साफ होता है। उबालकर (भाप में पकाकर) खाने से दस्त बंद होते हैं और मल बंधता है। भूनकर खाने से वात, पित्त और कफ–त्रिदोषों को समाप्त करती है।

5. कायाकल्प के समान सम्पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए वर्षा ऋतु में सेंधा नमक के साथ, शरद ऋतु में शर्करा के साथ, हेमन्त में सोंठ के साथ, शिथिर में पिप्पली के साथ, वसन्त में मधु के साथ तथा ग्रीष्म में गुड़ के साथ हरड़ का चूर्ण खाना चाहिए।

6. नमक के साथ हरड़ कफ़ को, शक्कर के साथ पित्त को, घी के साथ वात विकारों को और गुड़ के साथ त्रिदोष या समस्त रोगों को दूर करती है।

7. अर्श (बवासीर), अजीर्ण, गुल्म, वात रक्त तथा शोथ (सूजन) में हरड़–चूर्ण गुड़ के साथ देने से लाभ होता है। विषम ज्वर में मधु के साथ, अम्लपित्त, जीर्ण–ज्वर में मुनक्का के साथ, श्लीपद, फाइलेरिया, दाद, खाज, पाण्डु रोग में गोमूत्र के साथ, आमवात, आंत्रवृद्धि वृषण वृद्धि पर एरण्ड के तेल के साथ लेना चाहिए। मात्रा– एक ग्राम से तीन ग्राम तक।

सावधानी– दुर्बल, थके, पतले, गर्म प्रकृति वाले तथा गर्भवती स्त्री को उपयोग सावधानी से करना चाहिए।

विनम्र निवेदन

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून में पधारने वाले सभी भाई–बहनों से अनुरोध है कि वह अपने साथ आधार कार्ड / वोटर कार्ड की फोटोकॉपी अथवा आर्य समाज के प्रधान या मंत्री का पत्र लेकर आएं ताकि उन्हें आश्रम में उचित कमरे का आवंटन किया जा सके। प्रयास करें कि आश्रम में आने से पूर्व आश्रम के दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सम्पर्क कर लें ताकि खाली कमरों की वास्तविक स्थिति का पता लग सके।

नकली से असली

एक कुम्हार का युवा लड़का एक राजा के यहाँ पात्र देने गया। वहाँ युवक राजा की मनमोहिनी राजपुत्री को छत पर देख चकित हो गया। उसके हृदय में इस प्रकार कामबाण लगे कि वह घर आकर मोहिनी की याद में व्याकुल हो लेट गया और खाना–पीना सभी भुला कर केवल मोहिनी के ध्यान में हाय–हाय कर रहा था। घर के लोगों ने उसकी यह दशा देख उससे पूछा कि तुम्हें क्या कोई रोग है? परन्तु युवक ने किसी से कुछ न कहा!

कुछ काल के बाद उसकी माता ने जाकर पूछा, तो उसने अपनी माता से सच्चा–सच्चा वृतान्त कह सुनाया। वह बोला, "आज राजा के यहाँ राजपुत्री को देख, मेरी यह दशा हो गई। सो चाहे मेरे प्राण चले जायें परन्तु जब तक मुझे उस राजपुत्री के पुनः दर्शन नहीं होंगे तब तक भोजन नहीं करूँगा।" माँ ने कहा," उठो, अब भोजन करो। छह माह के पश्चात् मैं तुम्हें राजपुत्री का दर्शन करा दूँगी।

भोजन करने के पश्चात् उसकी माँ ने उससे कहा, "तुम 6 माह के लिये यहाँ से कहीं ओर चले जाओ। छह माह के बाद जब यहाँ आना, तो साधु का भेष बनाकर आना और राजा की फुलवारी में आकर ठहरना। वहाँ तुम्हें राजपुत्री के दर्शन हो जायेंगे।"

कुम्हार के बेटे ने वैसा ही किया। छह माह के पश्चात् राजा की वाटिका में वह कुम्हार साधु के वेश में आया तो उसने एक मनुष्य भेज अपनी माँ को बुलवा कर कहा, "अब राजपुत्री के दर्शन कराओ।" माँ ने कहा, "तुम आँखे बंदकर ध्यान में बैठ जाओ। मैं अभी तुम्हें दर्शन कराती हूँ। कुम्हार की माँ ने ग्राम में यह हल्ला कर दिया कि बड़े पहुँचे महात्मा आये हुए हैं। उनसे जो माँगों, सो देते हैं।" यह सुन कर ग्राम के नर–नारी वहाँ जाने लगे। यह बात राजमहल में भी पहुँची कि बड़े योग्य महात्मा हमारी फुलवारी में आये हैं। यह सुनकर राजा अपनी रानी तथा राजपुत्री के साथ साधु के दर्शन करने गये। राजा, रानी और राजपुत्री साधु के सामने पहुँचे, तो कुम्हार की माँ ने पीछे से संकेत किया, 'बेटा! राजा, रानी और राजपुत्री आगे खड़े हैं। अब दर्शन कर लो।' यह देखकर कुम्हार के लड़के ने सोचा कि आज जब कि मैं झूठा साधु, महात्मा बना हुआ हूँ तो मेरे आगे गाँव के अनेक नर, नारी, राजा, रानी तथा राजपुत्री खड़े हैं और यदि मैं सच्चा साधु महात्मा बन जाऊँ तो न जाने मुझे क्या–क्या फल प्राप्त हों।' ऐसा सोच कुम्हार के लड़के ने पुनः ध्यान से आँखें नहीं खोली। उसने सही अर्थों में परमात्मा से ध्यान लगा लिया था।

असतो मा सद् गमय तमसोर्मा
ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमयेति।।

फल– जो प्राणी संसार का मोह त्याग कर महात्मा बन जाता है, उसे परमात्मा के दर्शन हो ही जाते हैं।

–दृष्टांत समुच्चय से साभार

सौजन्य से– **APEX ENGINEERS**
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

ओ३म्

'योगेश्वर श्री कृष्ण, गीता एवं वेद'

–मनमोहन कुमार आर्य

श्री कृष्ण योगेश्वर थे, महात्मा थे, महावीर, धर्मात्मा व सुदर्शनचक्रधारी थे। वह वेदभक्त, ईश्वरभक्त, देशभक्त, ऋषियों व योगियों के अनुगामी थे। पूज्यों की पूजा व अपूज्यों की अवहेलना व उपेक्षा के साथ उनको दण्डित करते थे। अन्यायकारियों के लिए वह साक्षात काल थे। उन्होंने अपना सारा जीवन वेद धर्म का पालन करके व्यतीत किया। आज से लगभाग पांच हजार से कुछ अधिक वर्ष पूर्व उनका जन्म भारत की मथुरा नगरी में पिता वासुदेव व माता देवकी की कोख से हुआ था। महाभारत युद्ध में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। अनेक धर्म विरोधी व अन्यायकारियों का दमन कर–कराकर उन्होंने साधुओं व सज्जनों की रक्षा की। उनके बताये मार्ग पर न चलने से ही देश की वैदिक सनातन धर्मी जनता पर दुःख–दरिद्रता सहित पराधीनता व विधर्मियों द्वारा उनका व उनकी स्त्रियों का अपमान, शोषण व उन पर अन्याय किया गया। दुर्दिनों का यह सिलसिला चल ही रहा था कि महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने अतीत व स्वर्णिम इतिहास का स्मरण कराया व उन्हीं वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रचार व प्रसार किया जो सृष्टि की आदि से आरम्भ हुई परम्पराओं के अनुसार अभीष्ट थीं। कृष्ण– जन्माष्टमी पर्व श्री कृष्ण जी का जन्मोत्सव है। इसको मनाते समय हमें उनके सुदर्शन चक्र धारी व वेदों में निष्ठावान् स्वरूप को स्मरण कर स्वयं को उनके जैसा बनाने का व्रत लेना चाहिये।

महाभारत में कृष्ण के उपर्युक्त स्वरूप के ही दर्शन होते हैं। यद्यपि मध्यकाल में महाभारत ग्रन्थ में भारी प्रक्षेप हुए हैं परन्तु फिर भी उसमें श्रीकृष्ण जी पर ऐसे घिनौने आरोप नहीं लगाये जैसे परवर्ती मध्यकालीन भागवत व अन्य पुराणों में लगाये गये हैं। इससे हमारा सनातन वैदिक धर्म बदनाम हुआ और विधर्मियों ने इसका लाभ उठाया। धर्मान्तरण में भी कृष्णजी का यह पौराणिक स्वरूप विधर्मियों का सहायक रहा। स्थिति यह थी कि वेदों का पठन पाठन न होने से सर्वत्र अज्ञान का प्रभाव था। स्वार्थी अपने स्वार्थ की सिद्धि में तत्पर थे। उसी की देन, यह पुराण ग्रन्थ हैं। सत्य व यथार्थ को विस्मृत कर देने और श्रीकृष्णजी जैसे महापुरुषों का चरित्र हनन होने से देश व समाज दिन प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर हुए। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव होने पर उन्होंने गुरू विरजानन्द जी से प्राप्त आर्ष दृष्टि से सभी ऐतिहासिक स्थापनाओं

की जांच की। गुरु विरजानन्द जी ने उन्हें बताया था कि जिन ग्रन्थों में पूज्य महापुरुषों की निन्दा आदि हो, वह स्वार्थी व अज्ञानी लोगों के बनाये हुए ग्रन्थ होते हैं। पुराणादि ग्रन्थों के रचयिताओं को भाषा का तो ज्ञान था परन्तु वह सत्य ज्ञान व विद्या से कोसों दूर थे। वह हमारे ऋषि–मुनियों के ज्ञान व आचरण के सर्वथा विपरीत दुर्बल विचारों वाले मनुष्य थे। अतः महर्षि दयानन्द ने महाभारत का अध्ययन कर श्रीकृष्ण जी के सत्य चरित को जाना और उसके आधार पर पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण जी पर मिथ्या आरोपों का निराकरण करते हुए सत्य वचनों को प्रस्तुत किया। सत्यार्थप्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास में उन्होंने श्रीकृष्ण जी के विषय में जो लिखा है वह प्रत्येक भारतीय के लिए पठनीय है। उसे प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि **''देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत (ग्रन्थ) में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले (पुराण के रचनाकार ने) ने अनुचित मनमाने दोष (श्रीकृष्णजी पर) लगाये हैं। (उन पर) दूध, दही मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियों से रासमंडल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत (पुराण) न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?**

संसार मे धार्मिक ग्रन्थों में **''श्रीमद्भगवद्–गीता''** सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थों में से एक है। इस ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसे अन्य धर्मों के लोग भी जिज्ञासा, श्रद्धा एवं रूचि से पढ़ते हैं और इसे संसार में उपलब्ध धार्मिक साहित्य सर्वोत्तम मानते हैं। इसका कारण यह है कि इसमें आध्यात्मिक ज्ञान के वह सिद्धान्त, विचार व शिक्षायें हैं, जो अन्य धर्मों से उत्कृष्ट व सबकी आत्माओं द्वारा सहज रूप से स्वीकार्य होते हैं। अन्य धर्म ग्रन्थों में गीता के समान ईश्वर, जीवात्मा, योग व कर्तव्य सम्बन्धी ज्ञान उपलब्ध नहीं होता। ज्ञातव्य है कि गीता में पद्य शैली में 700 श्लोक हैं। यह महाभारत का अंग है जिसे महर्षि वेदव्यास ने लिखा है। गीता का ऐतिहासिक कथानक महाभारत की युद्ध भूमि में योगेश्वर कृष्ण के मित्र, शिष्य व सखा धनुर्धारी अर्जुन को विषाद होने पर उन्हें दी गईं शिक्षायें व ज्ञान है। इस ज्ञान को प्राप्त कर अर्जुन का मोह व विषाद दूर हो गया था और पूरे आत्म विश्वास एवं दृढ़ संकल्प के साथ वह युद्ध करने के लिए समुद्यत हो गये थे। गीता में ईश्वर, जीवात्मा, धर्म, कर्म, यज्ञ, योग, पाप, पुण्य, क्षत्रिय का धर्म आदि नाना विषयों पर अनेक सारगर्भित बातें भी हैं जो इसके मूल वेद, उपनिषद् आदि ग्रन्थों से ली गई हैं परन्तु इसकी विशेषता यह है कि इसमें अनेक बातें बहुत ही सरल व प्रभावशाली रूप में वर्णित हैं जो पाठकों को आकर्षित करती हैं।

प्रारब्ध के भोग तथा जीवात्मा के अभ्युदय एवं निःश्रेयस अर्थात् कल्याण प्राप्त करने के लिए मनुष्य जन्म ईश्वर के द्वारा मिलता है। वेद विहित कर्मो के आचरण को ही धर्म कहते हैं। इसके विपरीत कर्म पाप या अर्धम कहलाते हैं। गीता में पुण्य कर्मो को करने की प्रेरणा है। अत्याचार व अन्याय को न सहना व उसका विरोध करना पुण्य कर्म है। अन्याय व अधर्म को सहना व उसमें सम्मिलित होना पाप है। कर्तव्य से विमुख होकर जो कार्य व कर्म होते हैं, वह पाप कर्म होते हैं। अर्जुन क्षत्रिय होने पर भी क्षत्रियों के कर्मों का त्याग करने व वैराग्य की बातें करने लगा तो श्री कृष्ण जी ने उसे उसके कर्तव्यों का बोध कराया और जब उसे समझ में आ गया कि

उसे अन्याय के विरुद्ध लड़ना है तो उसने युद्ध के लिए कमर कस ली और पूरे मन से अन्त तक डटा रहा। ऐसा ही, हम सबको करने की शिक्षा गीता में दी गई है। गीता से सभी मनुष्यों को मार्गदर्शन मिलता है। यदि हम गीता पढ़कर भी अपने कर्तव्य को निर्धारित नहीं करते और कर्तव्य पथ पर नही चलते तो गीता का पढ़ना एक प्रकार से निरर्थक तो नहीं परन्तु उपयोगी भी नहीं होगा। जय–पराजय से ऊपर उठ कर युद्ध करना चाहिये। 'सत्यमेव जयते' के अनुसार विजय सदा सत्य की होती है परन्तु साथ ही सत्य पक्ष का विजय के लिए पुरूषार्थ भी असत्य पक्ष से कम नहीं होना चाहिये। लक्ष्य की प्राप्ति हेतु नीति से भी काम लेना चाहिये जैसा कि श्री कृष्ण जी व आचार्य चाणक्य ने अपने जीवनों में किया है। महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष के पास कौरवों से कम शक्ति थी परन्तु कृष्ण जी के परामर्श तथा पाण्डवों व उनके साथी–सहयोगियों के पुरुषार्थ के कारण विजय पाण्डवों को प्राप्त हुई। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि गीता को पढ़कर अनेक वैदिक शिक्षाओं व मान्यताओं का ज्ञान हो जाता है। गीता की कुछ शिक्षायें ऐसी भी हैं जिनसे वैदिक सिद्धान्तों पर पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ता। इनमें से एक सिद्धान्त त्रैतवाद का है जिसके अनुसार ईश्वर, जीव व प्रकृति अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, सनातन व शाश्वत हैं। जीव अनादि काल से ईश्वर से पृथक व स्वतन्त्र सत्ता है। जीव व ईश्वर का व्याप्य–व्यापक सम्बन्ध है।

अब वेद क्या है? इस पर दृष्टि डालते हैं। वेद सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी ईश्वर द्वारा इन चार आदि ऋषियों की जीवात्माओं के भीतर प्रेरणा द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेद स्वतः प्रमाण है और अन्य सभी ग्रन्थ परतः प्रमाण है। गीता का अर्जुन को ज्ञान देने वाले योगेश्वर श्री कृष्ण जी, स्वयं वेदों के परमभक्त व वैदिक परम्परा के ऋषि के समान विद्वान, योगी, धर्म रक्षक व क्षात्र धर्म का पालन करने वाले थे। वैदिक साहित्य में यह भी प्रमाण मिलता है कि मोक्ष की अवधि पूरी होने के बाद उनको कृष्ण के रूप में यह मानव जन्म मिला था। अतः यदि कहीं गीता में भी कोई बात वेद विरुद्ध आती है तो उसके स्थान पर विद्वानों को वैदिक मान्यताओं के प्रकाश में उसका समाधान कर संशोधन कर लेना चाहिये। सत्य सदा सर्वदा एक ही होता है, असत्य कई हो सकते हैं। वेद परम प्रमाण है। मनु जी ने भी कहा है कि 'धर्म जिज्ञासानाम् प्रमाणं परमं श्रुति।' अर्थात् धर्म में यदि कहीं भी कोई शंका व जिज्ञासा उत्पन्न हो तो उसके समाधान के लिए वैदिक मान्यतायें ही परम प्रमाण है।

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि योगेश्वर श्रीकृष्ण विश्व इतिहास में आदर्श व श्रेष्ठ पुरूष थे। महाभारत के अन्तर्गत गीता कुछ–कुछ वैदिक मान्यताओं का प्रचारक व प्रसारक ग्रन्थ है। गीता में जहां कहीं कोई बात वेदसंगत व वेदसम्मत न हो तो वहां वैदिक मान्यताओं को ही स्वीकार करना चाहिये। पाठक जब महर्षि दयानन्द प्रणीत सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थों को पढ़ेंगे तो उनको वेदों के परम प्रमाण होने व सभी वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान हो जाता है। अतः गीता के पाठकों को सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेद अवश्य ही पढ़ने चाहिये अन्यथा उनका ज्ञान अधूरा कहा जायेगा।

सौजन्य से– **THE HERITAGE SCHOOL**
14/6, New Road, Dehradun, India

ईश्वर एक है, अनेक नहीं

ईश्वर एक है, अनेक नहीं— वेद और वेदानुकूल सभी ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा है। एक ईश्वर ही अनेक नामों से पुकारा गया है। प्रत्येक नाम उसके किसी न किसी गुण को प्रकट करता है। जैसे—

ब्रह्मा— सब जगत् को बनाने वाला।

शिव— कल्याण स्वरूप और कल्याण करने वाला।

विष्णु— चर और अचर सब जगत् में व्यापक।

रुद्र— दुष्ट कर्म करने वालों को दण्ड देकर रुलाने वाला।

गणेश— सब का स्वामी और पालन करने वाला।

पिता— सब की पालना और रक्षा करने वाला।

देव— विद्वान् और विद्या आदि देने वाला।

यम— सब प्राणियों को न्यायपूर्वक यथायोग्य कर्म फल देने वाला।

भगवान्— ऐश्वर्यवान्।

चन्द्र— आनन्द स्वरूप और सबको आनन्द देने वाला।

ओ३म— यह शब्द तीन अक्षरों अ, उ, म् से बना है। अ+उ =ओ और म् के बीच में लिखा '३' ओम् के उच्चारण को लम्बा करने का (प्लुत का) निर्देष देता है।

अ— विराट्, अग्नि, विश्व आदि

उ— हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि।

म्— ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि।

विराट्— जो बहुत प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे।

अग्नि— जो स्वरूप सर्वज्ञ।

विश्व— जो आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु में प्रविष्ट हुआ है।

हिरण्यगर्भ— जो सूर्य आदि तेज वाले पदार्थों का उत्पत्ति तथा निवास स्थान है।

वायु— जो सब चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है।

तैजस — जो स्वयं प्रकाशस्वरूप तथा सूर्य आदि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है।

ईश्वर— सामर्थ्यवान्

आदित्य— जिसका विनाश कभी न हो।

प्राज्ञ — जो सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है।

ईश्वर के सब नामों में, 'ओम्' सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इससे उसके सबसे अधिक गुण प्रकट होते हैं। यही ईश्वर का प्रधान और निज नाम है। अन्य सभी नाम गौण हैं।

ओ३म खं ब्रह्मा। (यजुर्वेद 40, 16)

अर्थ— आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत का रक्षक ओ३म् है।

आ३म् क्रतोस्मर। (यजुर्वेद)

अर्थ— ऐ कर्मशील मनुष्य! ओ३म् को याद रख।

ओम् इति एतद् अक्षरम! उद्गीथम् उपासीत। (छान्दोग्योपनिषद)

अर्थ— ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता उसी की उपासना करनी योग्य है, और किसी की नहीं।

ओम् इति एतद् अक्षरम् इदम् सर्वं तस्य उपव्याख्यानम्। (माण्डूक्योपनिषद)

अर्थ— वेदादि सब शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम —ओम्' को कहा गया है।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।

यदिच्छन्तो ब्रह्माचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि आम् इति एतत्।। (कठोपनिषद्)

अर्थ— सारे वेद जिस पद का वर्णन करते हैं, जिसे जानने के लिए सब तप किए जाते हैं, जिसकी चाहना में यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद संक्षेप में तुझे बताता हूँ, वह पद ओम् है।

—आर्य मान्यताएँ पुस्तक से साभार

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)
(20 सितम्बर से 27 सितम्बर 2015)
आयोजक : वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 20 सितम्बर सायंकाल से प्रारम्भ होकर 27 सितम्बर प्रातः को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतू मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

(क) यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।

(ख) सम्पूर्ण शिविर मे विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नही हो सकेगा तथा 20 सितम्बर सायंकाल 5:00 बजे के बाद प्रवेश नही दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।

(ग) प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।

(घ) शिविर में अधिकाधिक 70 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी नवीन जिज्ञासुओं को अवसर व प्रोत्साहन देकर सहयोग प्रदान कर सकते है।

(ङ) स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें :–1श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, (मो०नं०–09310444170) समय दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक, 2.श्री यश वर्मा जी, यमुना नगर, मो0 09416446305 समय प्रातः 10.00 से सांय 5.00 बजे तक, 3.श्री विजेश गर्ग जी मो0 09410315022 10:00 बजे से सायं 4:00 बजे।

(च) अपनी वापसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नही है।

(छ) शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।

(झ) **शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।**

(स) आवश्यकता होने पर **आचार्य आशीष जी (मो०नं०–09410506701)** से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	ई० प्रेम प्रकाश शर्मा	सन्तोष रहेजा
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्षा
मो. 9810033799	मो. 9412051586	9910720157

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले में दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्रीमती कृष्णा देवी सपरा जी	11000
2.	श्री नरेश राघव जी	500
3.	श्रीमती अर्चना गुप्ता जी	1000
4.	श्री जयपाल सिंह जी	500
5.	श्री चन्द्र सैन गोयल जी	1100
6.	श्री कुलदीप सिंह चौहान	500
7.	श्री जगमोहन लाल जी	500
8.	श्री प्रेमदत्त उनियाल जी	1200
9.	श्री विजय सरीन जी	1100
10.	श्री सुखदेव गंभीर जी	1100
11.	श्री अशोक बजाज जी	1100
12.	श्री सुभाष चन्द अबराल जी	1000
13.	श्री अनिल आर्य जी	500
14.	श्री आर०के० शर्मा जी	1100
15.	श्रीमती विमल मनचन्दा जी	500
16.	श्रीमती कमला रहेजा जी	500
17.	श्रीमती मंजु अग्रवाल जी	2100
18.	श्री यू०एस० चोपड़ा जी	1500
19.	श्री एस०पी० सिंह जी	1100
20.	श्री सीताराम जी	500
21.	श्री हकीकत राय नन्दा जी	500
22.	श्री मदन मोहन आर्य जी	500
23.	श्री दयानन्द जी	500
24.	श्रीमती कृष्णा माटा जी	1000
25.	श्रीमती कमला देवी जी	500
26.	श्रीमती आशा जैमिनी जी	2500
27.	श्री कमल हंस जी	1100
28.	श्रीमती शकुन्तला गुप्ता जी	1100
29.	श्री राजीव कुमार	1100
30.	स्वामी गीतानन्द जी	501
31.	चौधरी औंकार सिंह	2100
32.	आर्य समाज पानीपत	1100
33.	श्रीमती मीनू गुप्ता जी	500
34.	श्रीमती विमला मनचंदा जी	500
35.	श्रीमती अर्चना जी	1000
36.	श्रीमती सुषमा आर्य जी	500
37.	श्रीमती शान्ता चड्ढा जी	500
38.	माता शान्ति जी	500
39.	श्री धर्मदत्त प्रभाकर जी	1000
40.	श्री कश्ते बेरी जी	500
41.	श्री धर्मवीर जी	500
42.	श्री केवल सिंह आर्य जी	1000
43.	श्री चावला जी	500
44.	श्री अंगीरस मुनि जी	500
45.	आर्य समाज शामली	3100
46.	श्री सतीश सूद जी	500
47.	श्री दीपक सूद जी	500
48.	श्रीमती विजय वधावन जी	500
49.	श्री इन्द्रजीत शर्मा जी	500
50.	श्रीमती अमन ज्योति जी	500
51.	श्री महेन्द्र पाल जी	500
52.	श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता जी	1000
53.	स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी	1100
54.	श्री बृजमोहन भण्डारी	500
55.	माता सरोज यति वैश्य	500
56.	श्री सुखबीर सिंह वर्मा जी	500
57.	श्री मानपाल सिंह राठी जी	500
58.	श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल	500
59.	श्री मनमोहन कुमार जी	501
60.	श्री रघुनन्दन आर्य जी	500
61.	श्री सुधीर गुलाटी जी	1100
62.	श्री हुकम सिंह जी	500
63.	श्री सूर्यकान्त जी	500
64.	श्री पारस पाहवा जी	1100
65.	श्री रामभज मदान	500
66.	श्री महेन्द्र कुमार आर्य	501
67.	श्री जगदीश चन्द्र जी	500
68.	श्री राजकुमार जी	500
69.	श्रीमती चन्द्रा देवी जी	501
70.	श्री सोमदेव जी	501
71.	श्री मनोज सरदाना	2100
72.	श्रीमती मीनाक्षी गाँधी	500
73.	श्री अनूप कुमार कौल	500
74.	आर्य समाज डाकपत्थर	500
75.	श्री वेदांत जी	500

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

पवमान पत्रिका के दिल्ली प्रदेश के आजीवन (15 वर्षीय) ग्राहकों द्वारा देय अवशेष शुल्क

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
NDL 1	श्री कृष्ण गोपाल दीवान	468 निमरी कालोनी	01.05.1998	Apr-03	1500
NDL 3	श्री मदन गोपाल दीवान	596 निमरी कालोनी	08.02.1989	2004	1500
NDL 4	श्री के0 पी0 सिंह	डब्ल्यू जैड 241 ई इन्द्रपुरी	08.02.1990	Feb-15	1500
NDL 5	श्री ओम प्रकाश दीवान	जे – 33 प्रथम तल साकेत	08.02.1989	2004	1500
NDL 8	जगदीश राज महाजन	468 निमड़ी कालोनी (विवेकानन्द नगर)	05.05.1989	May-05	1500
NDL 11	श्री डी0 एन आर्य	बी–405 गीताजंलि अपार्टमैट्स विकासमार्ग–विस्तार कड़कड़ड्मा	09.08.1989	Feb-05	1500
NDL 12	श्री प्रबोध भल्ला	41 कविता कालोनी नांगलोई	13.08.1989	Jul-04	1500
NDL 13	श्री विष्वनाथ सूरी	278 ए जी सी आर एन्क्लेव	04.09.2000	Aug-15	1500
NDL 15	श्री हरिष्चन्द्र खण्डपुर	द्वारा श्री सुरेशचन्द्र, 1146, सैक्टर– डी, पाकेट–1, वसन्त कुंज,	28.06.2000	May-15	1500
NDL 18	श्री अशोक वर्मा	9 स्टेट बैंक कालोनी (राणा प्रताप बाग)आज़ादपुर	24.06.1990	May-05	1500
NDL 19	श्री चन्द्रप्रकाश मलिक	सी–141 ईस्ट ऐण्ड अपार्टमैण्ट्स को–ओ.0 ग्रुप हाउसिंग सोसाइटी	09.07.1990	Jul-05	1500
NDL 20	श्री राज तनेजा	बी – 238 डेरावालनगर	01.06.1990	Dec-05	1500
NDL 23	श्री रविन्द्र कुमार गोयल	29 स्टेट बैंक कालोनी जी0 टी0 करनाल रोड			1500
NDL 24	श्री गौरी शंकर भारद्वाज	51 ऋषिनगर शंकूर बस्ती	18.02.2000	Feb-15	1500
NDL 25	श्री आर. एस. चुग	211–बी पाकेट–ए चरण–2 मयूर विहार एन. एच.–24	04.12.1991	Dec-06	1500
NDL 27	श्री मांगेराम आर्य	37/13/2 प्रकाश सदन बांकनेर	04.02.2000	Feb-15	1500
NDL 28	श्री सुरेन्द्रनाथ आहूजा	81 गुजरांवाला टाउन भाग–2	20.04.1992	Apr-05	1500
NDL 30	श्री प्रद्युमन तलवाड़	1–208 अशोक बिहार चरण–1	Details not available		1500
NDL 33	श्री बलदेवराज सेठ	सी–121/122 नव मुल्तान नगर पश्चिम बिहार के सामने	Details not available		1500
NDL 34	श्री एस0 के0 मलिक	एच–17/203 सैक्टर–7 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 35	श्रीमती आशा स्याल	ई0–7 ग्रीन–विस्तार	Details not available		1500
NDL 36	श्री यज्ञदत्त आर्य	109 हिल सोसाइटी प्लाटनं.17 सैक्टर–13 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 38	श्री राजेश बधवा	जी–6 कीर्तिनगर (प्रथम तल)	Details not available		1500
NDL 39	श्रीमती सुजाता सिब्बल	ग–1635 पुलिस चौकी के सामने मैन रोड गान्धीनगर	Details not available		1500
NDL 40	आशीष कुमार	सुपुत्र श्री श्रद्धानन्द एफ–2 विजयनगर	Details not available		1500
NDL 41	श्री शशि भूषण मल्होत्रा	ए–3/6 जीवन ज्योति अपार्टमैण्ट्स पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 42	श्री रामप्रकाश भार्गव	एफ़ 34–सी एम.आई. जी. फ्लैट हरिनगर	Details not available		1500
NDL 43	श्री अरविन्द चौधरी	1–बी/598–बी जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 44	डॉ दिनेश कुमार पुण्डीर	जी–2न्यू सीमलपुर	Details not available		1500
NDL 45	श्री पलटूमल उपनाम नरेन्द्र देव	188 राजपुरा सी. सी. कालोनी के निकट	Details not available		1500
NDL 46	श्री रमेश कुमार ठक्कर	पी–804 अनुपम अपार्टमैण्ट्स पूर्व अर्जुननगर शाहदरा	Details not available		1500
NDL 48	श्री धर्मचन्द बत्रा	के. यू. 30 पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 49	श्रीमती सुन्दर शान्ता चड्ढा	ए–34 निर्माण विहार	Details not available		1500
NDL 50	श्री चन्द्रशेखर कपूर	74 गुजरांवाला टाउन भाग–2	Details not available		1500
NDL 51	श्री अमित भाटिया	सुपुत्र श्री रणवीर भाटिया डी–7 हरिनगर घण्टाघर	Details not available		1500
NDL 52	श्रीमती ऊषा छाबड़ा	सी–1/75 वैस्टैण्ड एन्क्लेव	Details not available		1500
NDL 53	श्री विमल मदान	डी–16 सैक्टर–3 225 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 54	श्रीमती के0 एन0 डुडेजा	17/2682 शादीपुर	Details not available		1500
NDL 55	श्री राम विलास	डी–338 सैक्टर–1 अवन्तिका रोहिणी	Details not available		1500
NDL 56	श्रीमती रामचमेली	क्यू–34 राजौरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 57	श्रीमती उषा बंसल	सी–62 सीतापुरी भाग–1 थाना डाबरी डाक पालम	Details not available		1500
NDL 58	श्री अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट	31 यू0 बी0 जवाहरनगर	Details not available		1500
NDL 59	सर्वश्री हीरो होण्डा मोटर्स लि0	34 कम्युनिटी सैण्टर वसन्त लोक वसन्त विहार	Details not available		1500
NDL 60	श्रीमती लाज मोहन	ई–1024 सरस्वती विहार	Details not available		1500
NDL 61	श्री बजृ मोहन मुंजाल	34 कम्युनिटी सेण्टर वसन्त लोक वसन्त विहार	Details not available		1500
NDL 62	श्री प्रमोद भल्ला	एम–48 पश्चिम पटेल नगर	Details not available		1500
NDL 63	श्री द्रेवव्रत शास्त्री	जी–22 म0नं0 187–188 सैक्टर 7 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 64	श्रीमती बुद्धि आर्य	2–एफ कमलानगर	Details not available		1500
NDL 65	श्री निखिल विश्वजीत बत्रा	ई–31 रणजीत सिंह मार्ग आर्दश नगर	Details not available		1500

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
NDL 67	श्रीमती सविता धर्मपाल वधवा	19/68 पंजाबी बाग	Details not available		1500
NDL 68	प्रधान/मंत्रिणी जी	स्त्री आर्य समाज राजेन्द्रनगर	Details not available		1500
NDL 69	श्रीराम वर्मा	2059–ए/161 त्रिनगर	Details not available		1500
NDL 70	श्री दामोदर प्रसाद आर्य	5/9 खिचड़ीपुर कालोनी	Details not available		1500
NDL 71	श्री देवप्रकाश पाहवा	आर–33 राजौरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 72	श्री विश्वनाथ गुलाटी	सी–46 अशोक विहार फेज–1	Details not available		1500
NDL 73	श्रीमति द्रौपदी नारंग	डी–78 नारायण विहार	Details not available		1500
NDL 74	श्रीमती नीरू बजाज	789 सैक्टर–17 गुड़गांव	Details not available		1500
NDL 76	श्री वेदप्रकाश ओबराय	सी–4 एफ/236 जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 77	श्रीमती प्रेमवती	पत्नी श्री कुलदीप सिंह 23 सैक्टर–ए पाकेट–सी बसन्त कुँज	Details not available		1500
NDL 78	श्रीमती चारू मोगिया	डब्लू. जैड. 30ए/2 वीरेन्द्रनगर गली नं0 9 निकट हरिनगर डिपो	Details not available		1500
NDL 79	श्री विजय कुमार भाटिया	एस.डी.–447 टॉवर अपार्टमैण्ट पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 80	कु. ऋतम्भरा वधवा	ए–4/14–सी सुप्रिया अपार्टमैण्ट पश्चिम विहार	Details not available		1500
NDL 81	श्रीमती सुशीला भारती	36 एस.एफ.एस. फ़्लैटस अशोक विहार 4	Details not available		1500
NDL 82	श्रीमती सुनीता बग्गा	ए–5 एम0 सी0 डी0 फ्लैट स्वामी नगरदक्षिणी	Details not available		1500
NDL 83	श्री राजेन्द्र आनन्द	15 कपिल बिहार पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 85	श्रीमती पुष्पलता	ड़ी–71 हकीकतराय मार्ग आदर्श नगर	Details not available		1500
NDL 86	श्रीमती निर्मेश कान्ता	सी–4/सी–181 जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 87	श्रीमती सीमा आहूजा	जी.एच. 14/935 पश्चिम बिहार	Details not available		1500
NDL 88	श्रीमती कृष्णा महाजन	जी–14/5 राजौरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 89	श्री शाश्वत गौरव	701 अनुसन्धान विहार (डी.आ.डी.ओ) टिमारपुर	Details not available		1500
NDL 90	श्री रामभज मदान	126 राजा गार्डन	Details not available		1500
NDL 91	श्रीमती शशि चुग	258 राजधानी एन्क्लेव पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 93	श्रीमती सन्तोष पाहवा	आर–33 राजैरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 94	श्री अशोक कुमार शर्मा	51–ए ब्लॉक–सी पाकेट–बी डी ए (एमआईजी) फ्लैट रिजर्व बैंक कालोनी के	सामने शालिमार बाग		1500
NDL 95	श्री आनन्द्र प्रकाश वर्मा	सी–219 हरिनगर घंटाघर	Details not available		1500
NDL 96	आर्य मधु गुलिया	द्वारा श्रीमती पुश्पा शिवराजसिंह किशनगढ़ म0 नं0 111/9 वसन्तकुंज	Details not available		1500
NDL 97	चौ0 सूरजभान देसवाल	28 होज़ खास गांव	Details not available		1500
NDL 98	जयराम सिंह बिष्ट	ए–8 सर्वोदय एन्वलेव	Details not available		1500
NDL 99	श्री विजय सचदेव	2613/9 चूना मण्डी पहाड़गंज	Details not available		1500
NDL 100	श्री कैलाश घई	डबल्यू जैड 456 शिवनगर जेल मार्ग	Details not available		1500
NDL 101	श्री राजीव वर्मा	104 शारदा निकेतन पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 102	श्री एम.पी. आहूजा	ए.के. 80 शालीमार बाग	Details not available		1500
NDL 103	श्री हरीश वधवा	जी–225 नारायण विहार	Details not available		1500
NDL 104	श्रीमती आशा मुत्रेजा	ई–27 नारायण विहार	Details not available		1500
NDL 105	श्री विनय सन्दूजा	जे–5/113 राजौरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 106	श्रीमती रामप्यारी कठपालिया	डी0बी0 17/बी ए0एम0 आई0जी0 फ्लैटस हरिनगर	Details not available		1500
NDL 107	श्री रवि कुमार ग्रोवर	3/215 सुभाषनगर	Details not available		1500
NDL 108	श्री श्याम देव शास्त्री	आर्य समाज नारायण बिहार	Details not available		1500
NDL 109	श्री कर्णसिंह तॅवर	सरजाती कुंजगली शंकर लाल सी.बी. 81नारायणा विहार	Details not available		1500
NDL 111	श्री वेदप्रकाश मेहता	बी0एन0–25 (पूर्वी)शालीमार बाग	Details not available		1500
NDL 112	श्री सुभाष चन्द क्वात्रा	37 आनन्द विहार पीतम पुरा	Details not available		1500
NDL 113	श्री राकश वर्मा	ई0 30 जवाहर पार्क निकट विकास मार्ग लक्ष्मी नगर	Details not available		1500
NDL 114	श्री इन्द्र देव फ्लैट	नं0 47–डी एस0 एफ0 एस0 पाकिट–सी मयूर विहार चरण–3	Details not available		1500
NDL 115	श्री चन्द्रभान मल्होत्रा	सी–4 ई/31 पाकिट–8 जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 116	श्रीमती सशीला धर्मचंद	बत्रा सी–329 गली नं09 मजलिस पार्क आदर्शनगर	Details not available		1500
NDL 117	श्री वाई0 के0 उप्पल	209 गुलमोहर एन्क्लेव	Details not available		1500
NDL 118	श्री धर्मेन्द्र	डी–11/288 सैक्टर 7 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 119	श्रीमती अनीता गण्डोत्रा	ई0 डी0 74 टैगोर गार्डन	Details not available		1500
NDL 121	श्री रामलाल तनेजा	डी–99 सीतापुरी	Details not available		1500

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
NDL 122	श्री रामदुलारे मिश्र	1666 गोविन्दपुरी–विस्तार	Details not available		1500
NDL 123	डॉ0 सन्दीप चोपड़ा	97 पाकेट ए–1 सैक्टर–5 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 124	जयदेवी छाबडा	140–ए पाकेट–सी मयूर विहार चरण 2	Details not available		1500
NDL 125	डॉ0 धर्मवीर भारती	ई–39 सत्यवतीनगर	Details not available		1500
NDL 126	श्री संजय गांधी	के–30 बी0 के0 दत्त कालोनी लोधी मार्ग	Details not available		1500
NDL 127	श्रीमती कृष्ण कुमारी रहेजा	ए–150 सैनिक फ़ार्म	Details not available		1500
NDL 128	श्रीमती सरला मेहता	ए–20/8 न्यू फ्रैण्ड्स कालोनी	Details not available		1500
NDL 129	श्रीमती कमलेश साहनी	ए–168 डी0 डी0 ए0 फ़्लैट्स नई डबल स्टेरी कालकाजी	Details not available		1500
NDL 130	श्री राजेश वसुदेवा	बी–206 डेरावाल नगर	Details not available		1500
NDL 131	श्री नरेश वासुदेव	पी–50 ईश्वर कालोनी पोलो रोड़	Details not available		1500
NDL 132	श्री सुनील वासुदेव	64 कल्याण विहार	Details not available		1500
NDL 133	श्री केवल सांसी	172–कल्याण विहार	Details not available		1500
NDL 134	श्रीमती राज चचड़ा	16/1 पश्चिमी पटेलनगर	Details not available		1500
NDL 135	श्रीमती इश्वरी देवी भिरानी	9/6 पुराना राजेन्द्रनगर	Details not available		1500
NDL 136	मंत्री आर्य समाज	ए0 सी0 ब्लॉक टेगोर गार्डन	Details not available		1500
NDL 137	श्रीमती सुनीति देवी	डब्लूयू0जैड–346–डी नांगलरायाराषन–कार्यालय के	Details not available		1500
NDL 138	श्रीमती अनीशा अरोड़ा	ए–15 निजामुदीन पूर्व	Details not available		1500
NDL 139	श्री अविनाश चन्द्र	प्रधान आर्य समाज ई–7 अशोक विहार 1	Details not available		1500
NDL 140	श्री अर्जुन देव	8 श्री राम मार्ग	Details not available		1500
NDL 141	श्रीमती सुहागरानी भसीन	जी–122 मानसरोवर गार्डन	Details not available		1500
NDL 142	श्री एस. के. किंगर	51/16 पुराना राजेन्द्रनगर	Details not available		1500
NDL 143	श्री निर्मल मदान	1/27 सुभाशनगर	Details not available		1500
NDL 145	श्री लक्ष्मणदास नथैनी	न0 34 सम्राट एनक्लेव रोड 43 पीतमपुरा	Details not available		1500
NDL 146	श्री बालकृष्ण चौधरी	बी–103 केदार अपार्टमैण्ट्स सैक्टर 9 रोहिणी	08.10.2000	Dec-11	1500
NDL 147	श्रीमती मनमोहनी वैद	आर–541 नया राजेन्द्रनगर	01.10.2000	Nov-14	1500
NDL 149	श्री मुंशीराम सेठी	टी–राजौरी गार्डन कालोनी	01.04.2001	Apr-15	1500
NDL 150	श्रीमती चन्द्रवती दीवान	ए–161 सरस्वती विहार	28.04.2001	Apr-15	1500
NDL 151	श्रीमती सन्तोष कपूर	1066 डी0 डी0 ए0 फ़्लैट कालकाजी	Details not available		1500
NDL 152	श्री निर्मल तड़वाल	101 निमरी कालोनी	12.12.2001	Nov-15	1500
NDL 153	श्री चन्द्रप्रकाश नागपाल	1–बी भारत अपार्टमैंटस 31 इन्द्रप्रस्थ–विस्तार पटपड़गंज	Details not available		1500
NDL 154	श्री एस0 के0 जैन 10ए	भारत अपार्टमैंट्स 31 इन्द्रप्रस्थ विस्तारपटपड़गंज	30.04.2002	Mar-12	1500
NDL 155	श्री नरेन्द्र सागर	सी–44 साउथ ऐक्स्टैन्षन–1	Details not available		1500
NDL 156	श्रीमती विमला देवी	बी–5 ओरिएण्टल अपार्टमैंट्स प्लॉट नं0 5 सैक्टर–9 रोहिणी	05.07.1990	2005	1500
NDL 162	श्री सुशील सक्सेना	जे–152 राजौरी गार्डन	09.03.1989	Jan-04	1500
NDL 165	श्रीमती कान्ता सिक्का	एच–28 जंगपुरा–विस्तार	01.03.2000	Mar-15	1500
NDL 166	श्री धर्मपाल	सन–शाइन चैरिटी ट्रस्ट''श्री गुरु कृपा'' ए0 डी0 13 टैगोर गार्डन	01.06.1989	Jun-05	1500
NDL 171	मंत्री जी आर्य समाज	ग्रीन पार्क डब्ल्यू ब्लॉक के पीछे	20.07.89	Jul-05	1500
NDL 172	श्री राकेश बाली	39 दिल्लीराज्य ऑफ़िसर्स फ्लैट्स ग्रेटर कैलाश–1	28.06.2000	May-15	1500
NDL 173	श्री नवनीत आर्य	ड़ी–1/39 जनकपुरी	04.01.1990	Jan-05	1500
NDL 174	अ0 भा0 श्रद्धानन्द	दलितोद्धार सभा (रजि0) 8392/8398 आर्यनगर पहाड़गंज	23.01.1990	Jan-15	1500
NDL 178	श्री प्राणनाथ घई	डी–5 कैलाश कालोनी	02.07.1991	Jun-05	1500
NDL 181	प्रधान आर्य समाज	जनकपुरी वी ब्लोक	04.04.1991	Apr-06	1500
NDL 182	श्रीमती कृष्णा मेहता	डब्ल्यू–117 ग्रेटर कैलाश–1	Details not available		1500
NDL 184	श्री राजकुमार आनन्द	डी–26 कीर्तिनगर	Details not available		1500
NDL 185	उषा मेहता	कुकरेजा हाउस, 46, रानी झासी रोड,	Details not available		1500
NDL 186	सुश्री निशा ढींगरा	34 ई कमला नगर,	Details not available		1500
NDL 187	श्री रणवीर सिंह	डब्ल्यू जैड–170सी खामपुर	Details not available		1500
NDL 188	श्री अनिल शर्मा	15 आर्य समाज मन्दिर न्यू मोतीनगर	Details not available		1500
NDL 189	श्री अजय खनेजा	एम–488 गुरु हरकिशनगर	Details not available		1500
NDL 190	श्री विद्याभास्कर	सी–2/69 अशोक विहार–2	Details not available		1500

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
NDL 191	श्री रमेशचन्द्र	सचदेव प्रोपर्टी डीलर पिंक अपार्टमैण्ट बी–75'जी ब्लॉक'पष्चिम बिहार	Details not available		1500
NDL 192	रामपाल राणा	पुत्र श्री रामेश्वर दयाल राणा 533 बिजवासन काऑपरेटिव बैंक के पीछे			1500
NDL 193	जयप्रकाश अरोड़ा	एम0 आई0 जी0 फ्लैट सं0139पाकेट–3ए सैक्टर 8 रोहिणी	Details not available		1500
NDL 194	श्री राज कुमार मल्होत्रा	9/303 सुन्दर विहार	Details not available		1500
NDL 195	डॉ0 अविनाश नैयर	सी–771 न्यू फ्रैण्ड्स कालोनी	Details not available		1500
NDL 197	मेजर वेदव्यास	एफ़–404 सोम विहार संगम मार्गआर.के. पुरम्	Details not available		1500
NDL 198	विजयन्त गुप्त	गुप्ता डी–1/ए–71 जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 199	श्री राम प्रकाश भार्गव	ारण श्री रवीन्द्र नाथ भार्गव भारतीय स्टेट बैंक जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 200	सुश्री सुकर्मायती (शकुन्तला)	2 बाज़ार लेनबंगाली मार्केट	Details not available		1500
NDL 202	श्री आशीष भाटिया	सुपुत्र श्री विनोद भाटिया जें–8/123 राजौरी गार्डन	Details not available		1500
NDL 203	मंत्री	आर्य समाज भोगल जंगपुरा	Details not available		1500
NDL 205	श्रीमती संगीता कैला,	ए–388 सरिता विहार, मथुरा मार्ग	Details not available		1500
NDL 206	मंत्री	आर्य समाज ग्रेटर कैलाश–1	Details not available		1500
NDL 207	श्री रणधीर सिंह जी भल्ला	एस–322 ए पंचशील पार्क	Details not available		1500
NDL 209	श्री नीरज मुंजाल	बी–175 ग्रेटर कैलाश–1	Details not available		1500
NDL 210	श्री आर. के. भट्टेजा	3–डी डी. ए. फ्लैट सराय जुलेना निकट रेस्कॉर्ट्स हार्ट इन्स्टीटूट	Details not available		1500
NDL 211	श्रीमती सुरजीत	ई–3 मस्जिद मेरठ रेज़ीडेंशल एरिया ग्रेटर कैलाश 3	Details not available		1500
NDL 213	कैप्टेन डी0पी0 आनन्द	आर0 ज़ेड0–35 साउथ एक्सटेंशन पार्ट–35 उत्तमनगर	Details not available		1500
NDL 215	श्री गुलशन आहूजा	सी–2/213 जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 216	श्री रविदत्त	डबल्यू जैड़–346 डी नांगल राया	Details not available		1500
NDL 217	श्री कृष्ण मुलतानी वैद्य	66 बाबर मार्ग बंगाली मार्केट	Details not available		1500
NDL 218	अध्यक्ष श्री एस0 जे0	11 ग्रीन एवनेयु के पीछ, सेक्टर डी–3, भट्टा रोड, वसन्त कुंज,	Details not available		1500
NDL 219	संसार सिंह नागर जी	ईस्ट विनोद नगर म.नं–जे–1	Details not available		1500
NDL 220	श्री रोहित चौधरी	बी–1/598 बी जनकपुरी	Details not available		1500
NDL 222	डॉ0 राजेश अग्रवाल	एस0–212 ग्रेटर कैलाश–1	30.04.2002	Mar-12	1500
NDL 253	श्री मनजीत सिंह चौहान	545 माउट कैलाश इस्ट आफ कैलाश टावर न0–3 दक्षिण	13.09.1990	Aug-05	1500
					1500

यदि आपने पवमान का उपरोक्त शुल्क जमा कर दिया है तो उसकी रसीद संख्या एवं तिथि तथा धनराशि आदि की सूचना आश्रम में कार्यरत श्री रमाकान्त कौशिक, दूरभाष : 8171619653 पर दे दें।

सूचना

पवमान पत्रिका के सुविज्ञ पाठको को सूचित किया जाता है कि सितम्बर 2014 से पत्रिका का वार्षिक मूल्य 150 रुपये हो गया है। जिन ग्राहकों ने पत्रिका शुल्क जमा नहीं किया है वह पिछले वर्षों सहित इस वर्ष का शुल्क शीघ्र जमा कर दें। यह अन्तिम अनुरोध है अगले माह की पवमान पत्रिका केवल उन्हीं ग्राहकों को भेजी जाएगी जिनके द्वारा पत्रिका का शुल्क जमा कर दिया गया हो। आप कैनरा बैंक, क्लाक टावर, देहरादून (IFSC code : CNRB0002162) खाता 'पवमान' खाता सं. 2162101021169 में शुल्क जमा करा सकते हैं। आश्रम के दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सूचना प्राप्त होने पर आपके द्वारा जमा शुल्क की रसीद आपके पते पर भेज दी जायेगी। पत्रिका प्राप्त न होने पर इसकी सूचना आश्रम के ईमेल : vaidicsadanashram88@gmail.com अथवा श्री रमाकान्त कौशिक, मोबाईल नं. 8171619653 पर एसएमएस भेजने पर पत्रिका आपको पुनः भेज दी जाएगी। सूचनीय है कि पवमान पत्रिका के प्रकाशन पर प्रति माह लगभग 10 हजार रुपए की हानि हो रही है। आप समय पर पत्रिका का शुल्क जमा करके तथा विज्ञापन देकर इस हानि को कम कर सकते हैं। विज्ञापन के रेट प्रथम पृष्ठ पर दिये गये हैं।

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

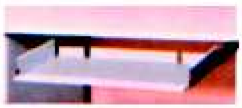

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं
ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री